UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182678
UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—68—11-1 68—2,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No H780.954 T36 R Accession No H 3612

Author ठाकुर, रवीन्द्रनाथ.

Title रवीन्द्र संगीत · संपा · लक्ष्मीनारायण गर्ग.

1958

This book should be returned on or before the date last marked below

रवीन्द्र संगीत

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पच्चीस गीतों का
स्वरलिपि सहित भावानुवाद

●

प्रस्तुतकर्ता
राधेश्याम पुरोहित

●

सम्पादक
लक्ष्मीनारायण गर्ग

मुद्रक
चन्द्रशेखर शर्मा
संगीत प्रेस, हाथरस (उ० प्र०)

इस पुस्तक के सभी गीतों का स्वरलिपि सहित
सर्वाधिकार राधेश्याम पुरोहित के अधीन है ।

आलाप ● ● ●

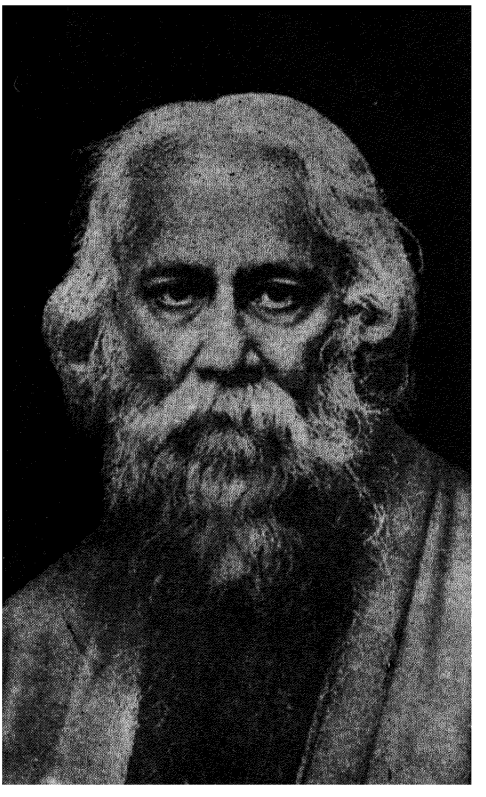

रवीन्द्र–जयन्ती पर रवीन्द्र के कृतित्व को स्वराभूषणो द्वारा अलकृत करके हम 'रवीन्द्र सगीत' के नाम से हिन्दी जगत को अर्पित कर रहे है। स्व० रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लगभग चार हजार ऐसे छन्दो की रचना की जिन्हे गेय कहा जासकता है। उनका छन्द स्वत सगीत मे बँध जाता था, जिसमे शास्त्रीय और लोक सगीत दोनो का प्राकृतिक समन्वय विद्यमान रहता था, और यही रवीन्द्र-संगीत की विशेषता है। अपने काव्य के माध्यम से उन्होने शास्त्रीय और लोकसगीत का ऐसा धरातल प्रस्तुत किया जिस पर कलाकार के अमूर्त्त भाव मूर्त्त हो उटते है। चेतना की कल्पना शक्ति को प्रेरित करके व्यजना अथवा आकृति की समृद्ध शक्ति के द्वारा उनके गीत रूप और गति की सफल अभिव्यक्ति करने मे सक्षम है।

बगला भाषा मे नाद सम्पत्ति का भण्डार है, अतः बगला काव्य तो एक प्रकार का सगीत ही है। १८ वी और १९ वी सदी मे बगला धुने कीर्त्तन और शास्त्रीय सगीत के प्रभाव से रग गई थी। किन्तु टैगोर के छन्द ने एक ऐसा मोड प्रदान किया जो सगीतकार के लिये आनन्द की मार्मिक अनुभूति बनकर रह गया। कविवर टैगोर का सगीत-अध्ययन अत्यन्त सूक्ष्म था, उनकी आवाज मे एक सिद्धगायक के कण्ठ जैसी मधुरिमा निहित थी। छन्द की गत्यात्मक तरग मे वे अपना कवि और सगीतज्ञ हृदय लेकर एक सम्राट की भाति विचरण किया करते थे। उनके छन्द की यह विशेषता है कि उसको विभिन्न लयो मे गाया जा सकता है, किन्तु उसके लिये ऐसे गायक की आवश्यकता है, जिसके मनान्तर्गत भावो मे सौन्दर्य विद्यमान हो और उसका नैतिक स्तर अत्यन्त उत्कृष्ट हो। अतएव, रवीन्द्र–सगीत जहाँ स्वच्छन्द–तरंग की भाति स्पष्ट और सरल है, वहाँ प्रस्तुतीकरण मे कठिन भी है।

एक सफल चित्रकार, सगीतकार तथा कवि होने के नाते टैगोर स्वय कलात्मक सौन्दर्य के प्रतिबिम्ब स्वरूप थे। सगीत के प्रति अन्य कलाओ की अपेक्षा उनके विचार अधिक उत्कृष्ट थे। जगत की आत्मा अथवा ईश्वर प्राप्ति के लिये 'सगीत' उनकी दृष्टि मे उपासना का पुष्प था। प्रकृति का सानिध्य रवीन्द्र को सदैव मिलता रहा, अत उसकी गोद मे जिस गेयकाव्य का निर्माण उनके द्वारा हुआ, वह विश्व-साहित्य मे अप्रतिम है। किसी को क्या मालूम है कि जब एक ओर सूर्य का अवसान हो रहा होता है और दूसरी ओर से तारे उद्भूत होते है तो तट पर बैठा कवि गगन की ओर निहारता हुआ कहाँ खोजाता है? यह आत्मविस्मृति की भावना ही शब्द और स्वरो को कही से खोज-खोजकर लाती है और छन्द के बधन में पिरोकर उसका एक सुनहरी हार बना देती है।

हर एक कवि के गीत नही गाये जासकते; इसी प्रकार हर गायक का सगीत शब्दो का चोला पहनने के योग्य नही होता। जो कवि काव्य-रचना के समय गायेगा और जो गायक गायन के समय काव्य की आत्मा के निकट रहेगा उसी को सफलता प्राप्त हो सकती है। अपने एक अनुभव में टैगोर ने कहा है—"गान मे जब शब्द होते है तो उन शब्दो के लिये यह उचित नही कि वे गान का अतिक्रमण करजायँ, वहाँ वे गान के वाहन मात्र है। गान अपने ही ऐश्वर्य से बडा है—वाक्य की गुलामी वह क्यो करने लगा? वाक्य जहाँ समाप्त होता है वही गान शुरू होता है जिसे वाक्य प्रगट नही कर सकता उसे गान करता है, इसीलिये वह अनिर्वचनीय है।"

एक स्थान पर टैगोर ने लिखा है कि गुनगुनाते-गुनगुनाते जब भी मैने कोई पक्ति लिखी है तभी देखा है कि स्वर जिस स्थान पर वाक्य को उडा लेगया, वहाँ तक वाक्य पैदल चलकर पहुच ही नही सका। तब ऐसा लगता है कि जिस गोपन बात को सुनने के लिये मन मे साध पोष रहा हूँ, वह मानो वनराज की श्यामलिमा में मिला हुआ है, पूर्णिमा रात्रि की निस्तब्ध शुभ्रता मे डूबा हुआ है, दिगन्तराज की नीलाभ सुदूरता मे अवगुण्ठित होरहा है। वह मानो समस्त स्थावर-जगम की गूढ और भेद भरी बात है।

बचपन का एक गीत जो टैगोर के अन्तस्तल मे वर्षो तक स्थाई रहा वह था—"तो मायि विदेशिनी साजिये के दिले" (तुम्हे विदेशिनी के वेश मे किसने सजा दिया) इस पद ने एक दिन टैगोर को दूसरा गान लिखने के लिये बाध्य कर ही दिया अत पहली पक्ति इस प्रकार लिखी गयी—"आमि चिनि गो चिनि तोमारे आगो विदेशिनी" (ऐ विदेशिनी, मैं तुम्हे पहचानता हू, पहचानता हूँ।) टैगोर का कहना था कि यदि मेरे इस गान के साथ स्वर न होता, तो उसकी क्या दशा होती, कह नही सकता, किन्तु स्वर के जादू ने मेरे मन मे विदेशिनी की एक अपूर्व मूर्ति साकार करदी। ब्रह्माण्ड की विश्वमोहिनी विदेशिनी के द्वार पर स्वर ने मुझे अनायास ही ला खडा किया। कभी-कभी जब बोलपुर के रास्ते से कोई गाता हुआ निकलता तो मुझे लगता कि बाउल का गान भी ठीक वही बात कह रहा है जो मेरे भावो के पिजडे मे कैद थी। मन उसे पकडकर चिरन्तन बनाकर रखना चाहता है, किन्तु कर नही पाता। उस अपरिचित पक्षी के नि शब्द आवागमन की सूचना स्वर के सिवाय और कौन दे सकता है? इसीलिये गान की पुस्तक मे मुझे सदैव सकोच लगता है। सगीत को छोडकर उसके वाहनो को सजा रखना ऐसा ही होता है, जैसे गणेश को छोड उनके चूहे को पकड रखना।"

रवीन्द्र के गीतो मे एक रहस्य है जो सहज ही बोधगम्य नही। केवल साधक और सहृदय के लिये उस रहस्य का द्वार खुलता है और वह रवीन्द्र के अन्तस्तल का स्पर्श करने मे सक्षम होता है। शिल्पी, गायक और कवि होने के नाते उनकी रचनाओ मे त्रिवेणी का एक ऐसा आनद मिलता है जिसमे अवगाहन कर सासारिक राग और द्वेष धुल जाते है लोक और परलोक प्रकाशित हो उठते है। कलाजन्य-आनन्द के द्वारा सत्य की उपलब्धि रवीन्द्र-सगीत का मूल उद्देश्य है, इसीलिए बगाल मे इसकी एक समृद्ध परम्परा विद्यमान है। सगीत, साहित्य, सौन्दर्य और सत्य का समन्वय होने के कारण रवीन्द्र-सगीत सस्कृति और कलात्मक जगत का सबसे अधिक सम्पन्न रूप है।

प्रस्तुत पुस्तक सगीत कार्यालय द्वारा हिन्दी जगत के लिये प्रथम प्रयास है, जिसको सगीत-प्रेमी साधको ने अपनाया तो निश्चय ही यह परिश्रम सार्थक सिद्ध होगा और रवीन्द्र का सगीत हिन्दीभाषियो मे अनुप्राणित हो उठेगा।

लक्ष्मीनारायण गर्ग

आशीर्वाणी

श्री राधेश्याम पुरोहित से आज उनके द्वारा किये गये बंगला रवीन्द्र संगीत का हिन्दी रूपान्तर सुर सहित सुन कर बड़ा संतोष हुआ। हिन्दी भाषा के बारे मे मेरा ज्ञान सामान्य होते हुये भी मुझे बचपन से ही नाना प्रकार के हिन्दी गीत सुनने और सीखने का मौका मिला है। हिन्दी गीतो के सुर मे बगला गीत प्रस्तुत करना, जिसे हम चलती बंगला मे "गान-भॉगा" (गीत तोड़ना) कहते है. ऐसे गीत भी ठाकुर परिवार मे प्रचलित हुये है। लेकिन बगला गीतो को और विशेष रूप से रवीन्द्र संगीत जैसे सूक्ष्म भाव और भाषायुक्त गीतो का मूल सुर अविकल रख कर हिन्दी मे रूपान्तरित किया जा सकता है—इसका दृष्टान्त मैंने आज पहली बार पाया है।

मैंने पहले ही कहा है कि गीतो के अनुवाद की भाषा के बारे मे मै अपने विचार प्रगट करने मे अक्षम हूँ। लेकिन रूपान्तरित गीत जो सरलता से मूल रवीन्द्र संगीत के सुर मे गाये जा सकते है, यह मैंने आज उपलब्ध किया है। और इस दृष्टि से श्री राधेश्याम का कृतित्व अति प्रशंसनीय मानती हूं। मै अपने अनुभव से कहती हूं कि मेरे परिचित हिन्दी के एक बड़े पंडित भी इस प्रकार के कार्य को करने के प्रस्ताव मात्र से भयभीत होकर पीछे हट गये थे। ऐसी दशा मे श्री राधेश्याम ने जो यह कठिन व्रत ग्रहण किया और अन्त तक उसे निभाया यह उनके आत्म प्रत्यय और निष्ठा का परिचायक है। भारतीय प्रदेशो मे ऐक्य और सद्भावना लाने की यह अभिनव प्रचेष्टा अति प्रशंसनीय है। श्री राधेश्याम की यह प्रचेष्टा सफल हो, यह आशीर्वाद करती हूं।

शांतिनिकेतन
२० मार्च, १९५८

(ह) इन्दिरा देवी चौधुरानी

भूमिका

श्री राधेश्याम पुरोहित से मै अच्छी तरह परिचित हूं। ये विश्वभारती विश्व-विद्यालय के बी. ए. (ऑनार्स) है और अर्थशास्त्र मे वही से एम. ए. कर रहे है। संगीत मे भी इनकी प्रगाढ़ अभिरुचि है। बगला-भाषा पर इन्होने सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त किया है और 'विश्व-भारती' मे रहने के कारण ये 'रवीन्द्र-सगीत' के मच्चे प्रेमी भी है। हिन्दी तो इनकी मातृ भापा ही है। इसीलिये इन्होने रवीन्द्रनाथ के कुछ गीतो का साधु हिन्दी मे रूपांतर करने का बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। श्री पुरोहित की विशेषता यह है कि ये रवीन्द्रनाथ द्वारा दिये गये अपने गीतो के मौलिक सुरो मे गा भी सकते है। इस प्रकार ये सगीतज्ञ और गायक भी है। इनकी इस पुस्तक के द्वारा हिन्दी भाषा-भाषी कुछ नवीन वस्तु प्राप्त करेगे। वह नवीन वस्तु है रवीन्द्रनाथ के गीतो का हिन्दी अनुवाद। हिन्दी मे अनूदित इन गीतो को 'रवीन्द्र संगीत' के शास्त्रीय नियमो के अनुसार गाया भी जा सकता है। तात्पर्य यह है कि इस अनुवाद मे गेय सुरो पर भी पूरा ध्यान रखा गया है। यह कहा जा सकता है कि ये रवीन्द्रनाथ के गीतो को भाषा और संगीत दोनो दृष्टियो से उनकी मौलिक विशेषताओ के साथ हिन्दी भाषी अथवा हिन्दी व्यवहारी जनो के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे है। प्रस्तुत पुस्तक के कुछ गीतो को मैने श्री पुरोहित से सुना है। मै वैसे संगीत के विषय मे अधिक जानकारी नहीं रखता, फिर भी जब ये इन गीतो को गा रहे थे तब मैने अनुभव किया कि इस कार्य मे इन्हे पूरी सफलता मिली है। श्री पुरोहित रवीन्द्रनाथ के पच्चीस गीतो को उनके जन्म दिन (बंगला पच्चीस वैशाख) के अवसर पर प्रकाशित कर रहे है। यह निश्चय ही बहुत ही उपयोगी प्रकाशन होगा। मै समझता हूँ कि बग प्रदेश के बाहर भारत मे रवीन्द्रनाथ के काव्य तथा संगीत दोनो के क्षेत्रो मे अवदानो को प्रचारित-प्रसारित करने के लक्ष्य के कारण यह कार्य उक्त कवि और गायक के प्रति वास्तविक श्रद्धा और सेवा का कार्य प्रमाणित होगा। इस क्षेत्र मे मै श्री पुरोहित की सम्पूर्ण सफलता का अभिलाषुक हूँ। रवीन्द्रनाथ के सगीत, काव्य और चित्र मे एक सार्वभौमिक मर्मस्पर्शिता है। किन्तु इस मर्मस्पर्शिता की अनुभूति अ-बंगाली व्यक्तियो मे कुछ अस्पष्ट रूप मे देखी जाती है। कुछ लोग तो इन (रवीन्द्रनाथ के मंगीत काव्य और चित्र) को आलोचनात्मक ढँग से देखते हुये पाये जाते है। मुझे यह इसलिये कहना पड़ रहा है कि मैने स्वय कुछ लोगो को ऐसा करते-कहते देखा-सुना है। श्री पुरोहित ने 'रवीन्द्र संगीत' को कुशल संगीतविद और श्रेष्ठ काव्य के प्रेमी के रूप मे अच्छी तरह समझा-बूझा है। इसीलिये ये पूर्ण प्रवीणता के साथ इन गीतो को मौलिक सुरो मे हिन्दी का रूप दे सके है। अब मुझे आशा है कि हिन्दी संसार के कवित्वरसिक और संगीत के मर्मज्ञो मे इस पुस्तक का यथोचित समादर होगा।

—सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या
सभापति विधान परिषद,
पश्चिम बग, कलिकाता।

परिचय

श्री राधेश्याम पुरोहित विश्व-भारती के छात्र के रूप मे यहाँ काफी दिनो से अध्ययन कर रहे है। अत: वे यहाँ के जीवन से घनिष्ठ भी हो गये हैं। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के साहित्य और सङ्गीत की ओर इनका स्वाभाविक अनुराग है। यद्यपि आपकी मातृभाषा हिन्दी (राजस्थानी) है, लेकिन यहाँ अध्ययन करने के कारण बगला-भाषा के प्रति इनका मन गंभीर भाव से आकृष्ट हुआ है। आपने रवीन्द्र साहित्य का अच्छा अध्ययन किया है और उसे अनुवादित करके हिन्दी भाषा-भाषी लोगो के लिये सुलभ भी किया है। इस अल्प उम्र मे ही इन्होने रवीन्द्रनाथ तथा अन्यान्य बंगाली कथाकारो की रचनाओ रो आठ पुस्तके प्रकाशित की है। उनके इस उत्साह को देखकर रवीन्द्रनाथ के संगीत को हिन्दी मे रूपान्तर करने की सभावना पर मेरी उनसे आलोचना हुई थी। बगाल संगीत को मौलिक रूप मे रूपांतर करना बड़ा कठिन काम है। लेकिन इस कार्य की कठिनता को देख कर भी श्री राधेश्याम पीछे नही हटे। अत. रवीन्द्र के गीत हिन्दी मे भी मौलिक सुर और ताल मे गाये जा सके, इसके प्रति मैने इनसे ध्यान रखने के लिये कहा। श्री राधेश्याम मुझसे लगभग ५-६ वर्षो से बंगला रवीन्द्र-सङ्गीत सीख रहे थे। अत. रवीन्द्र सगीत के सुर और छन्द के बारे मे अभिज्ञ हो गये थे। इसलिये प्रस्तावित गीतो के रूपांतर के कार्य मे वे सफल रहेगे, इस बारे मे मै प्रारम्भ से ही निश्चित था।

कुछ दिनो के बाद जब वे एक-दो करके रवीन्द्र के गीतो का हिन्दी रूपांतर करके मुझे सुनाने लगे तो मैंने अनुभव किया कि उनके रूपांतरित गीत भी बंगला रवीन्द्र-संगीत की तरह मूल सुर, लय और ताल मे गाये जा सकते है। श्री राधेश्याम के गीतो की भाषा भी बड़ी मधुर लगी। अत: मैने उनसे कहा कि वे इसी प्रकार के गीतो का और भी रूपांतर करे और रवीन्द्रनाथ के विभिन्न प्रकार के गीतो को स्वरलिपि सहित हिन्दी भाषा मे प्रकाशित करें। इस पुस्तक के ये पचीस गीत उनकी उस चेष्टा का ही फल है। ये सभी गीत मूल रवीन्द्र संगीत के सुर मे गाये जा सकते है। साथ ही मैने यह भी अच्छी तरह अनुभव किया है कि रवीन्द्रनाथ ने अपने बंगला गीतो मे जो भाव रखा था, श्री राधेश्याम के रूपांतरित हिन्दी गीतो मे भी वह भाव अक्षुण्ण रहा है। अत: गीतो मे कही भी सुर अथवा लय का विशेष परिवर्तन नही किया गया है। मेरा विश्वास है कि वर्त्तमान काल के हिन्दी कवि और गायक इन गीतो को जब मूल रवीन्द्र-संगीत के सुर मे सुनेगे तो किस प्रकार वैचित्रमय भाव को विचित्र रागिनी से गूँथा जा सकता है इसे वे अनुभव करेंगे तथा उससे अपनी सृष्टि के लिये भी नाना रूप से प्रेरणा लेगे। मै श्री राधेश्याम को उनकी इस प्रचेष्टा के लिये हृदय से आशीर्वाद देता हूँ। तथास्तु।

शांतिदेव घोष

१० मार्च, १९५८

अध्यक्ष, रवीन्द्र-सगीत और नृत्य विभाग

सगीत भवन, शांतिनिकेतन

प्रस्तावना

इस पुस्तक के प्रारम्भ मे तीन विद्वानो ने गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गीतो पर आलोकपात किया है, जिसके बाद कुछ कहना अनावश्यक हो जाता है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के गीतो की विशेषता और उनके शास्त्रीय नियमो का उल्लेख करते हुये तीनो महानुभावो ने मेरी इस नवीन प्रचेष्टा की ही अधिक प्रशसा की है। लेकिन रवीन्द्र-संगीत के नाम से जो संगीत प्रचलित है वह हमारे भारतीय सगीत-शास्त्र के नियमो को कितना मानता है तथा उससे कितना प्रभावित है, यह जानना भी आवश्यक है। संस्कृत को जिस प्रकार भारतीय समस्त भाषाओं की जननी कहा जाता है उसी प्रकार भारतीय संगीत-शास्त्र को भी इस महादेश की समस्त संगीत-धाराओ का उत्स माना जा सकता है।

स्वल्प स्थान मे रवीन्द्र संगीत की व्याख्या और उसकी विशेषताये समझाना कठिन है। फिर भी संक्षेप मे यह कहा जा सकता है कि रवीन्द्र सगीत एक ऐसा सगीत है जहाँ भारतीय समस्त प्रदेशो का सङ्गीत हिलोरें भरता है। भाव को वहन करती है भाषा और भाषा की पृष्ठभूमि पर सगीत अपने को प्रकाशित करता है। शास्त्रीय संगीत मे राग और रागिनियो की प्रधानता रहती है। भाषा वहाँ मुख्य स्थान नहीं रखती। दो या चार पंक्तियो को आश्रय करके गायक घटो राग-रागनियो का विस्तार और आलाप कर सकता है। लेकिन रवीन्द्र सगीत मे इसी स्थान पर तीन वस्तुएँ प्रमुख है। प्रथमतः भाव, द्वितीय भाषा और तृतीय सगीत। जैसा भाव हो उसी के अनुरूप भाषा और तद्रूप राग या रागिनी द्वारा उसे संगीत के रूप मे गाया जाना—यही 'रवीन्द्र सगीत' की विशेषता है। अर्थात् रवीन्द्र संगीत मे राग या रागिनी को जितनी प्रमुखता मिली है—काव्य को उससे कम नही मिली है। अत. इस सगीत का सम्पूर्ण आनन्द लेने के लिये काव्य की भाषा से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है। लेकिन जब तक हिन्दी भाषा-भाषी अथवा हिन्दी व्यवहारी जनो के लिये यह संभव न हो, मैने एक क्षुद्र प्रचेष्टा की है। वह है रवीन्द्र संगीत का उपरोक्त तीनो विशेषताओ सहित हिन्दी भाषा मे रूपान्तर।

इस पुस्तक के गीतो की स्वरलिपि के प्रारम्भ मे ताल और राग के नाम लिखे गये है। वैसे रवीन्द्रनाथ ने अपने कुछ गीतो के सिवाय कहीं भी राग अथवा ताल का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया है। मैने इस पुस्तक मे राग-रागिनियो का विश्लेषण इसलिये किया है कि रवीन्द्र संगीत से जो अपरिचित है वे जान सके कि इन गीतो मे कौन-कौन सी राग या रागिनियो का मिश्रण हुआ है। इसी स्थान पर यह लक्ष्यनीय है कि तीन या चार राग-रागिनियो का रवीन्द्रनाथ ने जैसा मिश्रण किया है उससे बहुधा एक नव-सुर की सृष्टि हुई है। यह नवीनता ही रवीन्द्र संगीत की विशेषता है।

इतिपूर्व तीनो महानुभावो ने यह संकेत किया है कि साहित्य का अनुवाद करना ही कठिन होता है। वहाँ भगवती की कृपा से मैने रवीन्द्र-सङ्गीत जैसे सूक्ष्म भाव और

भाषा युक्त गीतो का मौलिक सुर सहित रूपांतर किया है। लेकिन इस कार्य मे मै कहाँ तक सफल रहा हूं, यह कहना मेरे लिये संभव नहीं है। साथ ही इस कार्य मे कई त्रुटियो के रहने की संभावना है। दो-चार अ-शब्द कोशी हिन्दी शब्दो का प्रयोग भी मिल सकता है। इन सब के लिये एक मात्र मै ही उत्तरदायी हूँ। मेरे अल्प ज्ञान के कारण जो त्रुटियाँ रहेगी उन्हे सहृदय एवं, विद्वान पाठक सुधार लेंगे—ऐसी आशा करता हूँ।

अब कृतज्ञता और ऋण स्वीकार करना है।

मै अपनी श्रद्धा श्रद्धेया इन्दिरा देवी चौधुरानी, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, श्रीयुत् शिवनाथ तथा श्रीयुत् शान्तिदेव घोष के प्रति व्यक्त करता हूँ—जिन्होने आशीर्वाद तथा बहुमूल्य सुझाव देकर इस पुस्तक का प्रकाशन संभव किया है।

अंत मे निवेदन करूँगा कि यह पुस्तक मेरी अपनी प्रचेष्टा से कभी प्रकाश मे नहीं आती। प्रथमतः मैने कभी यह विचार ही नही किया था कि जो गीत मै लिखता हूँ उन्हे पुस्तक आकार मे प्रकाशित करना होगा और द्वितीयतः इन गीतो को रवीन्द्र-संगीत के नियमो के अनुसार स्वरलिपि-बद्ध करना होगा। मेरे लिये उपरोक्त कार्य असंभव था। इसलिये इस पुस्तक को प्रकाशित करने का सम्पूर्ण श्रेय श्रीयुक्ता तृणाराॅय, पी० एच० डी० (वॉन) सुश्री (कलकत्ता) को ही है। आपने इस पुस्तक की स्वरलिपि अति अल्पकाल मे प्रस्तुत की है तथा गीतो के राग-रागिनियों का विश्लेषण और भाषा एवं छन्द सम्बन्धी बहुत से सुझाव दिये है। उनके इस बहुमूल्य कार्य के लिये उन्हे धन्यवाद या आभार प्रदर्शित नहीं करूँगा। कारण, यह दोनो शब्द ही उनके लिये अपर्याप्त है। इस पुस्तक मे उनके सहयोग को मेरे प्रति उनके असीम स्नेह का प्रतीक चिरकाल तक मानता रहूँगा। एवमस्तु॥

२५ वैशाख—बगला सन् १३६६
८ मई १९५९
शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

राधेश्याम पुरोहित

स्वरलिपि–संकेत

पंडित भातखण्डेजी के मतानुसार ही स्वरलिपि प्रस्तुत की गई है। लेकिन इस पुस्तक की आवश्यकता और सुविधा के लिये कुछ नियम और चिह्न जोड़े गये है। चिन्हो की व्याख्या निम्नलिखित रूप से माननी चाहिये: –

(१) सा़ रे़ ग़ म प ध नि – स्वरग्राम के नीचे बिंदु रहने पर उसे मंद्र सप्तक का स्वर समझना चाहिये।

सा रे ग म प ध नि – स्वरग्राम मे यदि कही कोई चिन्ह न रहे तो उसे मध्य सप्तक का स्वर मानना चाहिये।

सां रें गं मं पं धं निं – स्वरग्राम के ऊपर बिंदु रहने पर उसे तार सप्तक के अन्तर्गत समझना चाहिये।

(२) रे॒ ग॒ ध॒ नि॒ – स्वर के नीचे "–" चिन्ह रहने पर उसे कोमल स्वर समझना चाहिये।

(३) मं॑ – मध्यम के ऊपर "।" चिन्ह रहे तो उसे तीव्र समझना चाहिये।

(४) ‿ – जिन स्वरो के नीचे "‿" यह चिन्ह रहे उन्हे एक मात्रा के भीतर समझे। जैसे सारे, सारेग, सारेगम इत्यादि।

(५) ⌒ – दो या उससे अधिक स्वरो पर यह धनुषाकृति रहने पर उन्हे मींड़ द्वारा गाना होगा। जैसे— सारे, सारेग इत्यादि।

(६) - – जिस स्वर के बाद "-" यह चिन्ह रहे उसका स्थायित्व दो मात्रा होगा, जैसे सा -। सा - - होने पर तीन मात्रा होगा। अर्थात् ऐसे प्रत्येक चिन्ह के लिये एक मात्रा स्थायित्व मानना चाहिये।

(७) ऽ —यह चिन्ह गीत के किसी शब्द के बाद रहे तो उस शब्द के अन्त्यस्थ स्वर वर्ग (आ-कार, इ-कार, उ-कार इत्यादि) का उच्चारण करके निर्देशित मात्रा के अनुसार गाना चाहिये।

(८) ग ग रे म —किसी स्वर के ऊपर छोटे अक्षर मे लिखे हुये अलंकारिक स्वर को 'कण' कहते है। ऐसे स्वर प्रधान स्वर के आगे हो चाहे पीछे, वहाँ क्षणकाल के लिये उन्हे स्पर्श करना पड़ता है।

(९) [ ] —यह निशान रहे तो स्वरो की पुनरावृत्ति करनी चाहिये।

(१०) { } —पुनरावृत्ति के समय ऐसा निशान भी रहे तो उसके अन्तर्गत स्वरो की पुनरावृत्ति नही होगी। जैसे—

[सा रे ग म | { प ध नि सा }]

लेकिन इसी निशान के अन्तर्गत स्वरो पर यदि दूसरे स्वर लिखे हो तो पुनरावृत्ति के समय उन्हे गाना चाहिये। जैसे:—

[सा रे ग म | { प नि ध प / प ध नि सां }]

(११) ∧ | ∨ —गीत की पंक्ति के अन्त मे यह निशान रहे तो उस पंक्ति का वही अन्त समझना चाहिये। वहाँ से पुनः स्थायी पर लौट सकते है अथवा गीत के आगे का हिस्सा शुरू कर सकते है।

(१२) —कॉमा चिन्ह के द्वारा किसी गीत की पंक्ति के छन्द मे जो विराम दिखाया गया है वह समय का नहीं बल्कि भाव का है।

(१३) (क) × —यह निशान स्वरलिपि के नीचे रहे तो वहाँ से 'सम' (ताल का प्रारम्भ) मानना चाहिये।

(ख) ० —यह चिन्ह खाली का है।

(ग) २, ३ —इत्यादि द्वारा सम-खाली के अलावा दूसरे ताल निर्दर्शित होंगे।

(१४) | —"|" इस लम्बी रेखा के द्वारा ताल का विभाजन दिखाया गया है। जैसे:—

सा	रे	ग	रे	ग	म	
×			०			

स्वरूप

	गीत	राग	पृ० स०
१	अरी बधू सुन्दरी	कालिगडा-रामकली	७०
२	अरे आओ रे	अडाना-बहार, मिश्र	७७
३	आज वर्षण मुखरित	पचम वसत मिश्र	४७
४	आज वसत जाग्रत	बहार मिश्र	६२
५	उस आसन तले	कीर्तनांग	१०६
६	ओ भुवन मन मोहिनी	भैरव भैरवी मिश्र	२१
७	ओरे गृहवासी	कल्याण प्रकार	६७
८	झरे-झरे-झरे-रंग का झरना	बहार अडाना मिश्र	७३
९	तुम कुछ दे जाओ	पीलू खम्माज	९३
१०	तुम्हारे असीम मे	बिहाग	१०६
११	दूर गॉव से	मॉड मिश्र	८१
१२	ध्वनित आह्वान	खट मिश्र	२५
१३	नमो नमो नमो करुणाघन	गौड़मल्लार मिश्र	४५
१४	प्रखर तपन ताप से	भीमपलासी, मुलतानी, भैरवी मिश्र	३३
१५	बादल धारा चली गई	पीलू मिश्र	५५
१६	बादल बाउल बजा रहा रे	बिहाग, खम्माज	३७
१७	मेरा मन मेघ का सार्थी	मल्हार मिश्र	५१
१८	मेरे मिलन के लिये तू	बागेश्री बहार	८९
१९	मेरी मुक्ति आलोक मे रे	केदार	११४
२०	वायु बहे जोर-जोर	यमन-भूपाली	८५
२१	वीणा मेरी कौन सुर गावे	भैरवी मिश्र	२९
२२	शरत आलोक के	कालिंगड़ा-रामकली मिश्र	५९
२३	सावन गगन मे घोर घनघटा	एक प्रकार का सावनी मल्लार	४१
२४	हिसा से मत्त पृथ्वी	भैरवी-मिश्र	९६
२५	होगी जय, होगी जय	आसावरी-भैरवी मिश्र	१०१
२६	परिशिष्ट		११७

रवीन्द्र संगीत

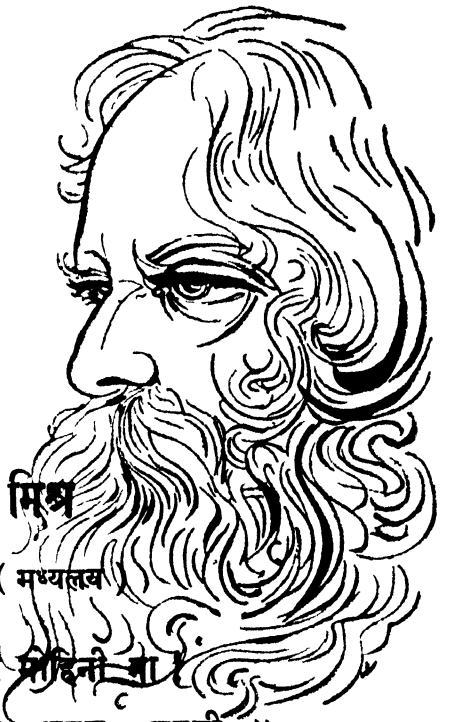

भैरव भैरवी मिश्र

कहरवा या त्रिताल (मध्यलय)

ओ भुवन मन मोहिनी ओ भुवन मन मोहिनी मा ।
ओ निर्मल सूर्य करोज्वल धरणी जनक जननी ॥
नील-सिंधु जल धौत चरण-तल अनिल विकम्पित श्यामल अंचल,
अंबर चुम्बित भाल–हिमाचल शुभ्र तुषार किरीटिनी ।
प्रथम प्रभात उदय तव गगन में प्रथम सामरव तव तपोवन में,
प्रथम प्रचारित तव वन-भवन में ज्ञान-धर्म बहु काव्य काहिनी ॥
चिरकल्याणमयी तुम धन्य हो, देश–विदेश में अन्नदायी हो,
जाह्नवी यमुना विगलित करुणा पुण्य पीयूषस्तन्य वाहिनी ॥

														म	ग
														ओ	ऽ

मग	मनि	निध	ध	प	मग	म	प	(नि)ध	–	–	–	–	–	प	मग
भुऽ	वऽ	नऽ	म	न	ऽऽ	मो	हि	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	ऽऽ
×				०				×				०			

मग	मनि	निध	ध	प	मग	म	प	(नि)ध	–	–	–	–	–	–	–
भुऽ	वऽ	नऽ	म	न	ऽऽ	मो	हि	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ध	नि	सां	–	ध	निसा	रे	–	धनि	सारें	गं	–	–	–	–	–
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

रें	सां	नि	ध	प	मग	म	प	(नि)ध	–	–	–	–	–	मा	रे
भु	व	न	म	न	ऽऽ	मो	हि	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	ऽ
×				०				×				०			

ग	ग	ग	रे	ग	–	ग	रे	ग	रे	ग	म	ग	रे	सा	–
नि	र	म	ल	सू	ऽ	र्य	क	रो	ऽ	ज्व	ल	ध	र	णी	ऽ
×				०				×				०			

सा	सांनि	सां	सारें	निसां	ध	प	ध	नि	ध	–	–	धनि	सारें	सां	सां
ज	नऽ	क	जऽ	नऽ	नी	ज	न	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ओ	ऽ
×				०				×				०			

नि	पनि	ध	ध	प	मग	म	ग	(नि)ध	–	–	–	–	–	–	–
भु	वऽ	न	म	न	ऽऽ	मो	हि	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ध़	–	ध़	ध़	ध़	नि़	ध़	नि़	सां	–	रें़	नि़	सां	सा	सां	सां
नी	ऽ	ल	सि	न्	धु	ज	ल	धौ	ऽ	त	च	र	ण	त	ल
×				०				×				०			
ध़	गं़	रें	गं़	गं़	रें़	रें़	सां	नि	–	सां	रें़	सां	नि़	ध़	प
अ	नि	ल	वि	क	ऽ	म्पि	त	श्याम	ऽ	म	ल	अं	ऽ	च	ल
×				०				×				०			
सा															
ध़	ध़	ध़	ध़	ध़	–	ध़	ध़	पध़	निसां	सां	नि़	धपं	नि़	ध़	प
अ	म्	ब	र	चु	ऽ	म्बि	त	भाऽ	ऽऽ	ल	हि	माऽ	ऽ	च	ल
×				०				×				०			
सा	–	सा	सा	ध़	–	नि़	सा	ध़	नि़	ध़	नि़	सागं़	रे़	रें़	सां
शु	ऽ	भ्र	तु	षा	ऽ	र	कि	री	ऽ	ऽ	टि	नीऽ	ऽ	ओं	ऽ
×				०				×				०			
नि़	पनि़	ध़	ध़	प	मग	म	प	नि़ ध़	–	–	–	–	–	–	–
भु	वऽ	न	म	न	ऽऽ	मो	हि	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
सा	सा	सा	सा	ग़	–	ग़	ग़	ग़	ग़	गरे	ग़	म	म	म	पम
प्र	थ	म	प्र	भा	ऽ	त	उ	द्	य	तऽ	व	ग	ग	न	मेऽ
×				०				×				०			
ग़	ग़	रे	ग़	–	ग़	रे	ग़	रे	ग़	म	ग़	रेग़	रे़	मा	–
प्र	थ	म	सा	ऽ	म	र	व	त	व	त	पो	वऽ	न	मे	ऽ
×				०				×				०			
नि़	सा	सा	सा	ध़	–	ध़	ध़	प	ध़	प	नि़	ध़	ध़	प	प
प्र	थ	म	प्र	चा	ऽ	रि	त	त	व	व	न	भ	व	न	मे
×				०				×				०			
ग़	–	म	म	–	नि़	ध़	प	ग़	–	म	ग़	रेग़	रे़	मा	–
ज्ञा	ऽ	न	ध	ऽ	र्म	व	हु	का	ऽ	व्य	का	ऽऽ	हि	नी	ऽ
×				०				×				०			

ध	ध	ध	नि	धनि	सारें	गं	रें	रें	सां	सां	नि	सां	–	सां	सां
चि	र	क	ऽ	ल्याऽ	ऽऽ	ण	म	यी	ऽ	तु	म	ध	ऽ	न्य	हो
×				०				×				०			

सा															
ध	गं	गं	रे	गं	–	रे	सां	नि	सां	रें	सां	सां	नि	नि	ध
दे	ऽ	श	वि	दे	ऽ	श	मे	अ	ऽ	न्न	दा	ऽ	यी	हो	ऽ
×				०				×				०			

														नि	
पध	निसां	नि	नि	ध	ध	प	मग	म	प	प	प	पम	प	ध	–
जाऽ	ऽऽ	ह्न	वी	य	मु	ना	ऽऽ	वि	ग	लि	त	कऽ	रु	णा	ऽ
×				०				×				०			

सा	–	सा	ध	–	ध	ध	–	ध	नि	सां	ध	नि	सां	गं	रे
पु	ऽ	ण्य	पी	ऽ	यू	ष	ऽ	स्त	ऽ	ण्य	वा	ऽ	हि	नी	ऽ
×				०				×				०			

	नि							नि								∧
सां	सां	नि	ध	प	मग	म	प	ध	–	–	–	–	–	–	–	
भु	व	न	म	न	ऽऽ	मो	हि	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
×				०				×				०				∨

इच्छानुसार गीत की प्रथम दो पंक्तियो की पुनरावृत्ति कर सकते है ।

खट मिश्र

तीव्रा (मध्यलय)

ध्वनित आह्वान मधुर गंभीर प्रभात अंबर में,
शांति-संगीत बाजे चतुर्दिक भुवन मंदिरों में।
अंतर में देखो महारूप को निखिल भुवन के परम बंधु को,
आओ आनन्दित शोभन साज से मिलन अंगन में॥
कलुष कल्मष विरोध विद्वेष होये निर्मल होये निःशेष-
चित्त की बाधा दूर होये नित्य कल्याण काज में।
मधुर स्वर में गाओ विहंगम पूर्व पश्चिम बंधु-संगम,
मैत्री बंधन पुण्यमय हो पवित्र विश्व समाज में॥

सा रे॒ म	म –	मग म	प प प	प प	प प
ध्व नि त	आ ऽ	ह्वा न	म धु र	ग म्	भी र
×	२	३	×	२	३

ध॒ ध॒ ध॒	ध॒ सां	सा सां	नि॒ प ध॒	नि॒ –	ध॒ –
प्र भा त	अ म्	ब र	मे ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ
×	२	३	×	२	३

प ध॒ प	पनि॒ –	ध॒ ध॒	प ध॒ प	पध॒ प	म म
शा ऽ न्ति	संऽ ऽ	गी त	बा जे च	तुऽ र	दि क
×	२	३	×	२	३

ग ग रे॒	ग म	प म	ग रे॒ –	मा –	– –
भु व न	मं ऽ	दि ऽ	रो ऽ ऽ	मे ऽ	ऽ ऽ
×	२	३	×	२	३

सा रे॒ म	म –	– –	ग म प	ध॒ –	– – ∧
ध्व नि त	रे ऽ	ऽ ऽ	ध्व नि त	रे ऽ	ऽ ऽ
×	२	३	×	२	३ ∨

उपरोक्त गीत की पुनरावृत्ति करके नीचे गाये।

ध॒ ध॒ ध॒	ध॒ सां	सां सां	सा सां ऽ	सां –	सा सां
अ न्त र	मे ऽ	दे खो	म हा ऽ	रू ऽ	प को
×	२	३	×	२	३

सां रें॒ रें॒	सांरें॒ ग	रें॒ सा	नि सां रें॒सां	निसां नि	ध॒ प
नि खि ल	भुऽ व	न कें	प र मऽ	बंऽ ऽ	धु को
×	२	३	×	२	३

गं॒ गं॒ गं॒	गं॒ रें॒	गं॒ गं॒	गं॒रें॒ मं गं॒	रें॒ –	सां सां
आ ओ आ	न न्	दि त	शोऽ भ न	सा ऽ	ज से
×	२	३	×	२	३

रें	सा	सां	त्रि	-	धु	प	ग	म	प	धु	-	-	-
मि	ल	न	अ	ऽ	ग	न	मे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सा	रे	म	म	-	म	-	ग	म	प	धु	-	-	-
ध्व	नि	त	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ध्व	नि	त	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		२		×			२		३	

प्रथम दो पक्तियो की पुनरावृत्ति करे ।

सागं	गं	गं	गं	गं	गंरें	गं	गंमं	म	गं	रे	-	सां	सां
कऽ	लु	ष	क	लु	मऽ	ष	विऽ	रो	ध	वि	ऽ	द्वे	ष
×			२		३		×			२		३	

(सा) रे	रे	सा	रे	रे	सा	सां	सांरें	सां	सां	त्रि	-	धु	प
हो	ऽ	ये	नि	र्	म	ल	होऽ	ऽ	ये	नि.	ऽ	शे	ष
×			२		३		×			२		३	

रे	-	सां	रे	-	सां	सा	रें	-	सां	त्रि	त्रि	धु	प
चि	ऽ	त्त	की	ऽ	बा	धा	दू	ऽ	र	हो	ऽ	ये	ऽ
×			२		३		×			२		३	

प	त्रि	धु	प	-	म	पम	ग	-	रे	सा	-	-	-
नि	ऽ	त्य	क	ऽ	ल्या	णऽ	का	ऽ	ज	मे	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

धु	धु	धु	नि	नि	सां	सां	रें	रें	सां	नि	-	सां	सां
म	धु	र	स्व	र	मे	ऽ	गा	ओ	वि	हं	ऽ	ग	म
×			२		३		×			२		३	

धु	धु	धु	नि	नि	सां	सा	निसां	रें	सा	(सा) नि	-	धु	प
धू	र्	व	प	श्	चि	म	बऽ	न्	धु	सं	ऽ	ग	म
×			२		३		×			२		३	

प	गं	गं	गं	रें	गं	गं	मंगं	-	गं	रें	रें	सां	सा
मै	ऽ	त्री	ब	न्	ध	न	पुऽ	ऽ	ण्य	म	य	हो	प
×			२		३		×			२		३	

रें	सा	सां	नि	-	धु	प	ग	म	प	धु	-	-	-
वि	ऽ	त्र	वि	ऽ	श्व	स	मा	ऽ	ज	मे	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सा	रे	म	म	-	-	-	ग	म	प	धु	-	-	-
ध्व	नि	त	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ध्व	नि	त	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

प्रथम दो पंक्तियो की पुनरावृत्ति करे ।

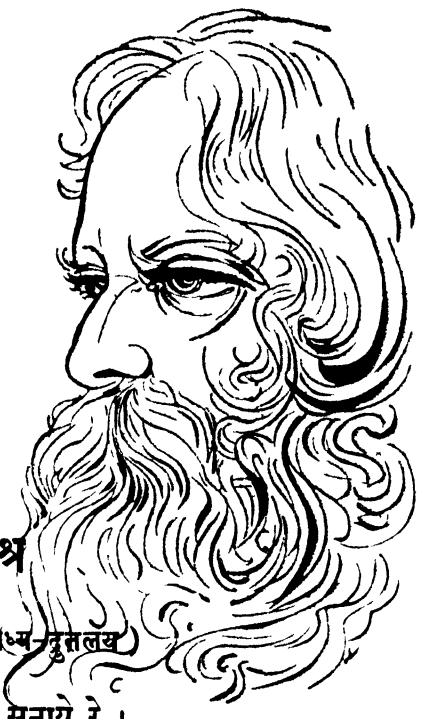

भैरवी–मिश्र

त्रिताल या कहरवा (मध्य-द्रुतलय)

वीणा मेरी कौन सुर गावे कौन नव राग सुनाये रे ।
मन में शंका क्यों लावे चमकित् भुवन सारा रे ॥
आया कौन राग आलाप के अंचल उसका डोले–
चरण नूपुर मदहोश उसके हुए हैं अब वे होले रे ॥
अंबर प्रांगन के आगे निःस्वर मंजिर बाजे ।
अश्रुत करताली जागे नव स्वर मानो साजे ॥
किसके परस की आशा तृणों में जागी भाषा ।
पवन भी बंधन तोड़े मचले किसके इशारे रे ॥

														सा	नि़
														वी	ऽ

		ध		म						ध					
ध	–	प	म	ध	ध	प	म	म	ध	प	–	–	–	–	–
णा	ऽ	मे	री	कौ	न	सु	र	गा	ऽ	व	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

											म				
पसा	सा	नि	ध	प	प	ग	ग	ग	म	म	ग	रे	–,	सा	नि
कौऽ	न	न	व	रा	ऽ	ग	सु	ऽ	ना	ऽ	ये	रे	ऽ,	वी	ऽ
×				२				०				३			

		ध		म						ध					
ध	–	प	म	ध	ध	प	म	म	ध	प	–	–	–,	सा	रे
ना	ऽ	मे	री	कौ	न	सु	र	गा	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ,	म	न
×				२				०				३			

रे						ग				म					
ग	–	सा	रे	ग	–	सा	रे	ग	रे	ग	ग	–	–	–	–
मे	ऽ	श	ऽ	का	ऽ	क्यों	ऽ	ऽ	ला	ऽ	वें	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

रे	ग	म	प	ध	ध	नि	नि	नि	–	सा	–	सा	–,	सा	नि
च	म	कि	त	भु	ऽ	व	न	सा	ऽ	रा	ऽ	रे	ऽ,	"वी	ऽ"
×				२				०				३			

"वीणा मेरी कौन सुर गावे" को दो बार गाने के बाद आगे गाये।

												नि			
ध	ध	ध	नि	नि	सां	सा	सां	रें	सां	नि	प	सा	–	सां	रे
आ	या	कौ	न	रा	ऽ	ग	आ	ला	ऽ	ऽ	प	के	ऽ	अ	ऽ
×				२				०				३			

		गं		रें				रें		गं					
गं	गं	सां	रें	गं	–	सा	रें	गं	–	रें	–	सां	–	–	–
च	ल	उ	स	का	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

सां	सागं	रें	सां	नि	नि	ध	म	ध	–	नि	नि	सागं	–	–	–
च	रऽ	ण	नू	पु	र	म	द	हो	श	उ	स	केऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

सागं	रें	सा	नि	ध	प	म	गं	म	–	गं	–	रे	–	मा	नि
हुऽ	ये	है	ऽ	अ	ब	वे	ऽ	हो	ऽ	ले	ऽ	रे	ऽ	"वां	ऽ"
×				२				०				३			

पूर्व उल्लेखित अश की पुनरावृत्ति करे ।

सा	प	प	प	प	–	प	प	प	म	प	म	ध	–	–	प
अ	ऽ	ब	र	प्रां	ऽ	ग	न	के	ऽ	आ	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

मप	–	गं	गं	म	म	गं	रे	गं	रे	मा	–	–	–	–	–
निःऽ	ऽ	स्व	र	म	ऽ	र्जी	र	बा	ऽ	जे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

गं	–	धं	निं	सा	सा	रे	नि	सा	रे	गं	–	सा	रे	गं	-
अ	ऽ	श्रु	त	क	र	ता	ली	जा	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

मा	रे	गं	रे	सा	रे	म	गं	रे	गं	रे	मा	–	–	–	–
न	व	स्व	र	मा	ऽ	नो	ऽ	सा	ऽ	जे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

गं	गं	रे	सां	धं	धं	निं	सां	रें	निं	सा	–	–	–	–	सा
कि	म	के	ऽ	प	र	स	की	आ	ऽ	शा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तृ
×				२				०				३			

सा				सा				सा							
रें	–	सां	निं	धं	धं	निं	सां	रें	निं	सां	–	सां	रें	गं	मं
णो	ऽ	मे	ऽ	जा	ऽ	गी	ऽ	भा	ऽ	षा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

	सा	सा	
ग॒ं ग॒ं रे॒ं सां	ध॒ ध॒ नि॒ सां	रे॒ नि॒ सा -	- - - सा
कि स के ऽ	प र श की	आ ऽ शा ऽ	ऽ ऽ ऽ तृ
×	२	०	३

सा	सा	सा	
रे॒ - सां नि॒	ध॒ ध॒ नि॒ सां	रे॒ नि॒ सा -	- - - सा
णो ऽ मे ऽ	जा ऽ गी ऽ	भा ऽ षा ऽ	ऽ ऽ ऽ प
×	२	०	३

सा	रे	रे	
ग॒ं ग॒ं ग॒ं रे	ग॒ं ग॒ं ग॒ं रे	ग॒ं रे ग॒ं रे	मं - - -
व न भी ऽ	बं ऽ ध न	तो ऽ डे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

म	रे		"⌒"	∧
मं मं ग॒ ग॒ं	ग॒ं ग॒ं रे॒ रे॒	रे॒ - सां -	सा -, सा नि॒	|
म च ले ऽ	कि स के इ	शा ऽ रे ऽ	रे ऽ, "वी ऽ"	|
×	२	०	३	∨

गीत की पहली दो पंक्तियाँ गाये।

———

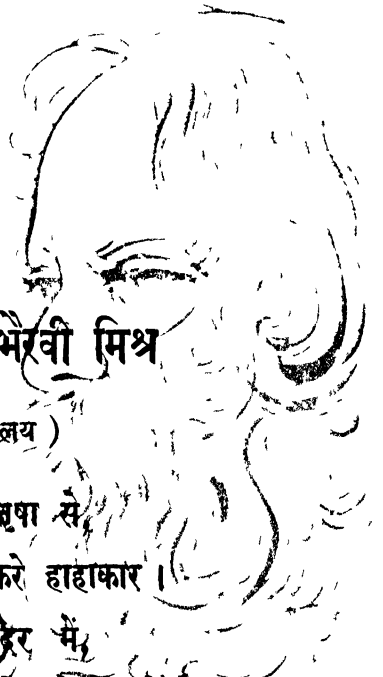

भीमपलासी, मुलतानी, भैरवी मिश्र

एकताल—(विलम्बित लय)

प्रखर तपन ताप से, आकाश काँपे तृषा से,
वायु करे हाहाकार ।
दीर्घ पथ के शेष मे, पुकारा मंदिर में,
'खोलो–खोलो–खोलो द्वार ।।'
सुन किसकी पुकार
कब हुआ हूँ बाहर,
अभी मलिन होगा प्रभात का फूलहार ।
खोलो–खोलो–खोलो द्वार ।
मन में बाजे आशाहीना, क्षीण मर्मर वीणा ।
यह न जानूँ कोई है या ना, पाऊँना उसका सार ।।
आज सारे दिन मेरे, प्राण मे ये सुर भरे ।
अकेला कैसे वहूँ गान का भार ।
खोलो–खोलो–खोलो द्वार ।।

* ग॒	रे	सा	नि॒	सा	म	मप	ग॒म	पम	(म)प	–	–
प्र	ख	र	त	प	न	ताऽ	ऽऽ	ऽप	से	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

साप	प	प	मं	प	–	पध॒	पध॒प	मंप	मग॒	म	ग॒
आऽ	का	श	काँ	पे	ऽ	तृऽ	षाऽऽ	ऽऽ	सेऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

ग॒	ग॒	म	प	प	नि	नि	नि	सां	सां	–	सां
वा	यु	ऽ	क	रे	ऽ	हा	हा	ऽ	का	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

सां	गं॒	गं॒	रे	सां	सां	सारे	(रे)सां	सां	नि॒	नि॒	–
दी	ऽ	र्घ	प	थ	के	शेऽ	ष	मे	ऽ	पु	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि॒	–	नि॒	नि॒सा	(सा)नि॒	नि॒	ध॒	ध॒	प	प	प	नि॒
का	ऽ	रा	ऽऽ	म	न्दि	र	मे	ऽ	खो	लो	ऽ
×		०		२		०		३		४	

(नि॒)ध॒	नि॒	–	नि॒सां	सां	नि॒	ध॒	प	प	–	–	–
खो	लो	ऽ	खोऽ	लो	ऽ	द्वा	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

"प्रखर तपन ताप से" तक पुनरावृत्ति करे।

प	–	प	(प)म	ग॒	म	प	नि	नि	सां	–	सा
सु	ऽ	न	कि	ऽ	स	की	ऽ	पु	का	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

* पुनरावृत्ति के समय "प्रखर" शब्द को "मग॒" गाये।

प्रऽ

सा	नि	गं	रे	–	सां	सा नि	सा	–	नि	–	नि
क	ब	हु	आ	ऽ	हूं	बा	ऽ	ऽ	ह	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	
निसां	–	नि	नि	ध	ध	ध	प	–	–	–	–
आऽ	ऽ	भी	म	लि	न	हो	गा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
प	प	प	प	पध	प	प मं	प	ग	मं	प	ध
प्र	भा	त	का	फुऽ	ल	हा	ऽ	र	खो	लो	ऽ
×		०		२		०		३		४	
मं	प	ग	मं	प	ध	ध मं	प	–	–	–	प
खो	लो	ऽ	खो	लो	ऽ	द्वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	V

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करे।

मासा	प	पध	प	म	गरे	रे ग	–	रे	मग	–	रे
मन	मे	बाऽ	जे	आ	शाऽ	ही	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
मा	रे	ग	ग	ग	म	म ग	–	रे	सा	–	–
ची	ण	म	र्	म	र	वी	ऽ	ऽ	णा	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
मासा	सापं	प	प	प	पम	प	–	ध	धनि	–	नि ध
यह	नऽ	जा	नूँ	को	ईऽ	है	ऽ	या	नाऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
ध प	ध	ध प	मम	ग	म	प	–	–	–	–	प
पा	ऊँ	ना	उस	का	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

				म							
प	प	प	म	ग॒	म	प	पनि	-	नि	सां	सां
आ	ज	सा	रे	दि	न	मे	रेऽ	ऽ	प्रा	ऽ	ण
×		०		२		०		३		४	

						सा					
सां	नि॒	गं॒	रे	सां	रेसां	नि	सां	-	नि॒	-	-
मे	ऽ	ये	सु	ऽ	रऽ	भ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि॒सां	सां	नि॒	नि॒	नि॒	ध॒	ध॒	ध॒	प	प	प	-
अऽ	के	ला	कै	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	व	हूँ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

					सा		रें				
प	-	ध	नि॒	सां	नि॒	सांरें	सां	नि॒	ध॒	प	ध॒
गा	ऽ	न	का	ऽ	ऽ	भाऽ	ऽ	र	खो	लो	ऽ
×		०		२		०		३		४	

ध						ध॒					
मं	प	ग॒	मं	प	ध॒	मं	प	-	-	-	प
खो	लो	ऽ	खो	लो	ऽ	द्वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

"प्रखर तपन·······खोलो द्वार" तक पुनरावृत्ति करे ।

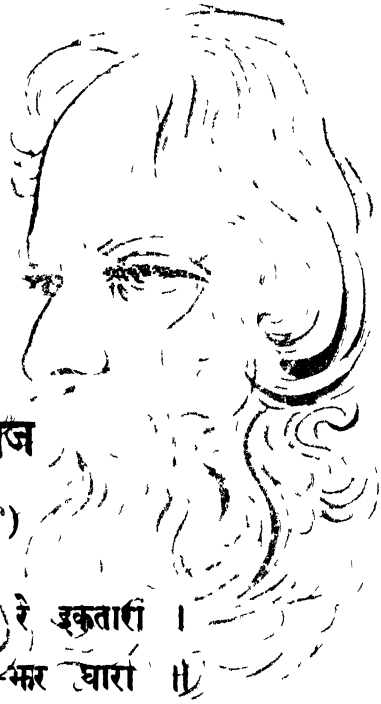

बिहाग, खम्बाज

कहरवा (मध्यलय)

बादल बाउल बजा रहा रे इकतारा ।
सारी बेला झरे झर-झर-झर धारा ॥
जामुन वन में धान खेत में,
आप मत्त अपने तानों में,
नाचत नाचत बावला हारा ॥
घनी जटा से धनाधार नभ में स्वर साजे ।
पात-पात पर टुप-टुप ध्वनि का नुपूर मधुर बाजे ॥
घर-बार छुड़ाता आकुल सुर में,
उदास घूमें पुर-पुर में,
पुरवैया में गृह हारा ॥

सा	–	ग	ग	ग	म	धप	प	प ग	ग	म	म	म ग	–	पम	ग
बा	ऽ	द	ल	बा	ऽ	उऽ	ल	ब	जा	ऽ	र	हा	ऽ	रेऽ	ऽ
×				०				×				०			
ग			प	म								नि		नि	
रे	रे	गप	म	ग	–	–	–	गप	मं	प	नि	ध	नि	प	प
ब	जा	ऽऽ	र	हा	ऽ	ऽ	ऽ	बऽ	जा	ऽ	र	हा	ऽ	ए	क
×				०				×				०			
				प											
प	ध	म	प	ग	म	रे	ग	सा	–	ग	ग	ग	म	धप	प
ता	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ	द	ल	बा	ऽ	उऽ	ल
×				०				×				०			
प				म				ग			प	म			
ग	ग	म	म	ग	–	पम	म	रे	रे	गप	म	ग	–,	प	–
ब	जा	ऽ	र	हा	ऽ	रेऽ	ऽ	ब	जा	ऽऽ	र	हा	ऽ,	सा	ऽ
×				०				×				०			
प	नि	–	नि	नि	सां	–	सानि	धनि	–	प	–	–	–	प	मं
री	ऽ	ऽ	बे	ला	ऽ	ऽ	झऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	झ	र
×				०				×				०			
		सा		नि		नि						प			Λ
प	सां	नि	सां	ध	नि	प	–	प	ध	म	प	ग	म	रे	ग
झ	ऽ	र	ऽ	झ	ऽ	र	ऽ	धा	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			V

"बादल बाउल बजा रहा रे" तक पुनरावृत्ति करे।

						नि									
प	मं	ध	प	पनि	ध	नि	–	निसां	–	सा	–	सां	सां	सा	–
जा	ऽ	मु	न	बऽ	ने	मे	ऽ	धाऽ	ऽ	न	ऽ	खे	त	मे	ऽ
×				०				×				०			
						नि									
पसां	–	सां	नि	ध	नि	सां	सां	सां	नि	रे	सांनि	धनि	नि	धप	–
आऽ	ऽ	पे	म	ऽ	त्त	आ	ऽ	प	ऽ	न	ऽऽ	ताऽ	नो	मेऽ	ऽ
×				०				×				०			

								ध		ध		प		म	
प	सा	–	ऩि	ऩि	–	ऩि	ध	प	ध	प	प	म	पम	ग	ग
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ना	ऽ	च	त	ना	ऽ	च	त	ना	ऽऽ	च	त
×				०				×				०			

सा	सा	ग	–	ग	म	प	–
बा	व	ला	ऽ	हा	ऽ	रा	ऽ
×				०			

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें ।

						सा								रे	
सा	सा	–	सा	सा	–	ऩि	–	सा	सा	रे	रे	रे	–	सा	ऩि
घ	नी	ऽ	ज	टा	ऽ	से	ऽ	ध	नां	ऽ	ऽ	धा	ऽ	ऽ	र
×				०				×				०			

सा	सा	ग	ग	गम	म	प	म	गम	रे	ग	–	–	–	–	–
न	भ	मे	ऽ	स्वर	ऽ	सा	ऽ	जेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

										नि		ध			
गप	मं	प	मं	मंप	मंप	ग	मं	प	नि	ध	ध	प	मं	प	–
पाऽ	ऽ	त	पा	ऽऽ	ऽत	प	र	ढु	प	ढु	प	ध्व	नि	का	ऽ
×				०				×				०			

प		ध		प				ग		म					
मंप	ध	प	प	म	–	ग	ग	रे	पंम	ग	–	–	–	–	–
नूऽ	ऽ	पु	र	म	ऽ	धु	र	रा	ऽऽ	जे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

			ग												
गंसां	सां	गं	रें	रें	–	सां	–	सां	–	सां	सां	सां	सा	सां	नि
घर	बा	र	छु	ड़ा	ऽ	ता	ऽ	आ	ऽ	कु	ल	मु	र	मे	ऽ
×				०				×				०			

नि ध	नि	सां	-	सां	-	सां	नि	नि ध	नि	सां	नि	धनि	नि	धप	-
उ	ऽ	दा	ऽ	स	ऽ	घू	ऽ	मे	ऽ	पु	र	पुऽ	र	मेऽ	ऽ
×				०				×				०			

नि	नि	निसां	सा नि	नि ध	नि	धप	-	प	सां	-	-	नि	-	-	ध
पु	र	वैऽ	ऽ	या	ऽ	मेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ध प	-	ध	प	प म	-	प	-
'गृ	ऽ	ह	ऽ	हा	ऽ	रा	ऽ
×				०			

गीत की प्रथम दो पंक्तियाँ गाये।

एक प्रकार की सावनी मल्लार

त्रिताल (मध्यलय)

सावन गगन में घोर घन घटा निशीथ यामिनी रे।
कुंजवन सखि कैसे जाऊँ अबला कामिनी रे॥
उन्मद पवन यमुना तर्जित, घन-घन गर्जित मेंह।
विद्युत दमकत पथतरु लुंठित, थर-थर कम्पित देह॥
घन-घन रिमझिम् रिमझिम् रिमझिम् बरसत नीरद पुंज।
शाल पियाले, ताल-तमाले निविड़ तिमिरमय कुंज॥
कह रे सजनी ए दुख योगे कुंजे निरदय कान।
दारुण बंशी काहे बजावत, सकरुण राधा नाम॥
मोतीहार से वेश बनादे, सींथि लगा मेरे भाले।
उड़त बिलुंठित लोल-चिकुर मम बाँधह चम्पक माले॥
गहन रात में न जाओ बाला, नवलकिशोर के पास।
गरजे घन-घन, बहु डर पावत, कहे भानु तव दास॥

			प					रे							
रे	प	म	प	ग़	रे	मग़	रे	सा	रेग़	ग़रे	सा	रे	नि़	सा	–,
सा	ऽ	व	न	ग	ग	ऽन	मे,	घो	ऽऽ	रऽ	घ	न	घ	टा	ऽ,
×				२				०				३			

								नि़							
म	म	प	प	प	म	मनि़	नि़	ग़	–	–	–	रे	सा	रे	–
नि	शी	ऽ	थ	या	ऽ	मिऽ	नी	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

								प		नि़					
म	प	प	प	प	–	प	प	नि़	–	ध	नि़	ध	नि़	ध	प
कुं	ऽ	ज	व	न	ऽ	स	खि	कै	ऽ	से	ऽ	जा	ऽ	ऊँ	ऽ
×				२				०				३			

म	म	प	म	प	–	प	पसां	नि़सां	नि़सां	नि़	ध	प	म	ग़रे	सा
अ	ब	ला	ऽ	का	ऽ	मि	नीऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
×				२				०				३			

"सावन ····· निशीथ यामिनी रे" तक पुनरावृत्ति करें।

												रें			
म	प	प	प	प	प	प	नि	नि	नि	नि	सां	सां	–	सां	सां
उ	न	म	द	प	व	ने	ऽ	य	मु	ना	ऽ	त	ऽ	र्जि	त
×				२				०				३			

								ध				ध			
म	म	प	प	प	–	प	ध	नि़	–	धप	ध	प	–	–	–
घ	न	घ	न	ग	ऽ	र्जि	त	मे	ऽ	ऽऽ	ऽ	ह	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

म	प	प	प	प	प	प	प	म	प	प	पनि	नि	सां	सां	सां
वि	द्	यु	त	द	म	क	त	प	थ	त	रूऽ	लु	ए	ठि	त
×				२				०				३			

		रें						ध				प			
नि	निरें	सां	नि़	ध	ध	प	पध	म	–	पधप	मप	ग़	–	–	–
थ	रऽ	थ	र	क	मृ	पि	तऽ	दे	ऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ह	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	म	म	म	म	पम	ग	म	म
घ	न	घ	न	रि	म्	झि	म्	रि	म्	झि	म्	रिऽ	म्	झि	म्
×				२				०				३			

								ध				प			
ग	म	प	प	प	–	प	पध	म	–	पधप	मप	ग॒	–	रेसा	रे
ब	र	ष	त	नी	ऽ	र	दऽ	पुं	ऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ज	ऽ	ऽऽ	ऽ
×				२				०				३			

				ग						प					
ग	–	ग	ग	म	ग	म	–	गम	प	म	ग॒रे	मग॒	रे	सा	–
शा	ऽ	ल	पि	या	ऽ	ले	ऽ	ताऽ	ऽ	ल	तऽ	माऽ	ऽ	ले	ऽ
×				२				०				३			

		प		प		ग॒									
रे	प	म	प	म	मग॒	रे	सा	रेसा	नि	सा	–	–	–	–	–
नि	वि	ड़	ति	मि	रऽ	म	य	कुंऽ	ऽ	ज	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

												रें			
म	प	प	नि	नि	नि	नि	–	पनि	–	सां	रें	नि	–	सां	–
क	ह	रे	ऽ	स	ज	नि	ऽ	एऽ	ऽ	दु	रू	यो	ऽ	गे	ऽ
×				२				०				३			

				सा											
सा	रे	सांरे	सां	नि॒	नि॒	धप	ध	सांनि	–	धप	ध	प	–	–	–
कुं	ऽ	जेऽ	ऽ	नि	र	दऽ	य	काऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

										नि॒		सा			
म	प	प	प	प	प	प	म	प	नि॒	ध	नि॒	नि॒	–	ध॒	प
दाऽ	ऽ	रू	ण	वृं	ऽ	शी	ऽ	का	ऽ	हे	ब	जा	ऽ	व	त
×				२				०				३			

प				ध				प							
म	म	प	पध	म	–	पध	मप	ग॒	–	–	–	रे	–	सा	–
स	क	रू	णाऽ	रा	ऽ	धाऽ	ऽऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ
×				२				०				३			

सानि़ - प नि़	नि सा सा सा	सानि़ - प़ नि़	नि सा सा -
मोऽ ऽ ती ऽ	हा ऽ र से	वेऽ ऽ श ब	ना ऽ दे ऽ
×	२	०	३

		म	
सानि़ - सा रे	रे - रे सा	रेसा रे ग॒ -	- - - -
सीऽ ऽ थि ल	गा ऽ मे रे	भाऽ ऽ ले ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

म म प प	प - प प	म प प पनि॒	पनि॒ नि॒ प प
उ ड त वि	लुं ऽ ठि त	लो ऽ ल चिऽ	कुऽ र म म
×	२	०	३

प	म	म	
म - प प	पसां सां ग॒ ग॒म	ग॒ - - म	रे ग॒ सा -
बोँ ऽ ध ह	चऽ म् प कऽ	मा ऽ ऽ ऽ	ले ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

		नि	रें
म प पनि नि	नि नि नि -	प नि - सांरे	नि - सां -
ग ह नऽ रा	ऽ त मे ऽ	न जा ऽ ओऽ	बा ऽ ला ऽ
×	२	०	३

रें			
सा निरे सां नि॒ध	नि॒ - धप ध	सांनि॒ - - ध	प - - -
न वऽ ल किऽ	शो ऽ रऽ के	पाऽ ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

	नि॒ नि॒	रें	रें
पनि॒ नि॒ नि॒ -	ध नि॒ धप ध	ध रे सां रे	नि॒ - ध प
गऽ र जे ऽ	घ न घऽ न	ब हु ड र	पा ऽ व त
×	२	०	३

प	ध	म	
म म - प	- प पध प	ग॒ - - -	रे - सा -
क हे ऽ भा	ऽ नु तऽ व	दा ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

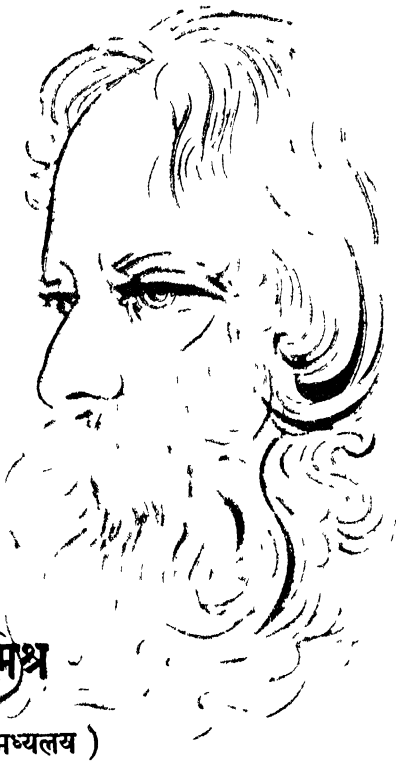

गौड़मल्हार मिश्र

कहरवा या त्रिताल (मध्यलय)

नमो नमो नमो करुणाघन नमो हे।
नयन स्निग्ध अमृतांजन सरसे।
जीवन पूर्ण सुधा रस बरसे॥
तव दर्शन धन-सार्थक मन हे।
अकृपण वर्षन करुणा घन हे॥

म रे म म	प प म प	पसां निसां ध प	प म प म –
न मो न मो	न मो क रु	णाऽ ऽऽ घ न	न मो हे ऽ
×	०	×	०
– – – ग	रे ग रे –	रे प प म –	गरे ग रेसा –
ऽ ऽ ऽ ऽ	न म हे ऽ	न म हे ऽ	नऽ म हेऽ ऽ
×	०	×	०
म प प पनि	नि नि नि सां	सां सां सां सां	सां नि सां –
न य न स्निऽ	ग् ध अ मृ	ता न् ज न	स र से ऽ
×	०	×	०
सा ध ध ध	धसां सां सा सा	सां निरें सां सां	निसां ध प –
जी ऽ व न	पूऽ र ण सु	धा ऽऽ र स	बऽ र से ऽ
×	०	×	०
पमं ध प प	म म म ग	रे प प प	प मं प –
तऽ व द र	श न घ न	सा र् थ क	म न हे ऽ
×	०	×	०
ध नि सां नि	ध नि ध प	रे ग म धप	म ग रेसा –
अ कृ प ण	ब र् ष न	क रु णा ऽऽ	घ न हेऽ ऽ
×	०	×	०
मा रे रे –	रे प प म –	गरे ग रेसा –	– – – –
न मो हे ऽ	न मो हे ऽ	नऽ मो हेऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

प्रथम पक्ति की पुनरावृत्ति करें।

पंचम वसंत मिश्र

कहरवा (मध्यलय)

आज वर्षण मुखरित श्रावण रजनी ।
स्मृति वेदन की माला गाँथू एकाकिनी ॥
आज कौन भ्रम में भूलूँ ।
अंधार घर का यह द्वार खोलूँ ॥
मानो वह आ रहा है ।
मेरा साथी, यह दुख यामिनी ॥
आरहा वह, धारा जल में, सुर लगाये ।
नीपवन पुलक जगाये ॥
यदि वह न आये और ।
वृथा आश्वास की डोर ।
धूलि पै फैला मिलन-आसन बीते रे निशीथिनी ॥

पंचम वसंत मिश्र

कहरवा (मध्यलय)

आज वर्षण मुखरित श्रावण रजनी
स्मृति वेदन की माला गाँथू एकाकिनी ॥
आज कौन भ्रम में भूलूं ।
अंधार घर का यह द्वार खोलूँ ॥
मानो वह आ रहा है ।
मेरा साथी, यह दुख यामिनी ॥
आरहा वह, धारा जल में, सुर लगाये ।
नीपवन पुलक जगाये ॥
यदि वह न आये और ।
वृथा आश्वास की डोर ।
धूलि पै फैला मिलन-आसन बीते रे निशीथिनी ॥

			ध नि
			आ ज
			०
सां सांगं गं गंरें	रें रेंसां सां –	म – – –	– – – –
व रऽ ष ण	मु खऽ रि ऽ	त ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०
ग म प म	ग म प म	ग रे सा –	– – – –
श्रा ऽ ऽ ऽ	व ऽ ऽ ण	र ज नी ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०
सा सामं म म	म म म –	म प ग –	म ध ध –
स्मृ तिऽ वे द	न की मा ऽ	ला ऽ ऽ ऽ	गाँ थू ए ऽ
×	०	×	०
नि – सां रें	नि सां ध नि		
का ऽ कि ऽ	नी ऽ "आ ज"		
×	०		

"आज·····रजनी" तक पुनरावृत्ति करे।

			सां रे
			आ ज
			०
नि सां ध धनि	नि – सा रें	नि सा – –	– – – सांरें
कौ ऽ न भ्रम	मे ऽ भू ऽ	लूँ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऑऽ
×	०	×	०
नि सां ध धध	नि – सां रें	नि सां ध नि	सां – सां रें
धा ऽ र घर	का ऽ य ह	दु वा र खो	लूँ ऽ, आ ज
×	०	×	०

नि	सां	ध	धनि	नि	-	सां	रे	नि	सां	-	-	-	-	-	सांरें
कौ	ऽ	न	भ्रम	मे	ऽ	भू	ऽ	लूँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आँऽ
×				०				×				०			

नि	सां	ध	धध	नि	-	सां	रें	नि	सां	ध	नि	सां	-	-	-
धा	ऽ	र	घर	का	ऽ	य	ह	दु	वा	र	खो	लूँ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

नि	सां	सांसां	नि	नि	निध	ध	धप	प	म	म	-	-	-	सां	नि
मा	नो	वह	ऽ	आ	ऽऽ	ऽ	रऽ	हा	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	मे	रा
×				०				×				०			

सा	गं	ग	गं	गंगं	मं	प	(प) मं	गं	रें	सा	रे	नि	सां	ध	नि
सा	ऽ	थी	ऽ	यह	ऽ	दु	ख	या	ऽ	मि	ऽ	नी	ऽ	"आ	ज"
×				०				×				०			

"आज······रजनी" तक पुनरावृत्ति करें।

सा	साम	म	म	मम	-	-	-	साम	म	म	म	म	प	ग	-
आ	ऽऽ	र	हा	वह	ऽ	ऽ	ऽ	धाऽ	रा	ज	ल	मे	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

म	ध	ध	ध	ध	-	म	-	म	ध	नि	सां	रे	रे	रेंसां	सां
सु	र	ल	गा	ये	ऽ	ऽ	ऽ	नी	प	व	न	पु	ल	कऽ	ज
×				०				×				०			

नि	-	सां	-	-	-	-	-	सां	गं	गग	गं	ग	मं	गंमं	पमं
गा	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य	दि	वह	ऽ	न	ऽ	आऽ	येऽ
×				०				×				०			

मंपं	(प) मं	ग	-	-	-	-	-	गं	मं	मं	गं	गं	रे	रें	सा
औ	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वृ	था	आ	ऽ	श्वा	स	की	ऽ
×				०				×				०			

सां	ध	ध	सां	-	-	-	सां	सा	साम	म	-	म	-	म	-
डो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	धु	निऽ	पै	ऽ	फै	ऽ	ला	ऽ
×				०				×				०			

ग														सा	रें
म	म	म	म	म	प	ग	-	म	ध	ध	ध	नि	सां	रे	सां
मि	ल	न	आ	स	ऽ	न	ऽ	बां	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ	नि	शि
×				०				×				०			

नि	-	सां	रें	नि	सां	ध	नि								
थि	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	"आ	ज"								
×				०											

प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें ।

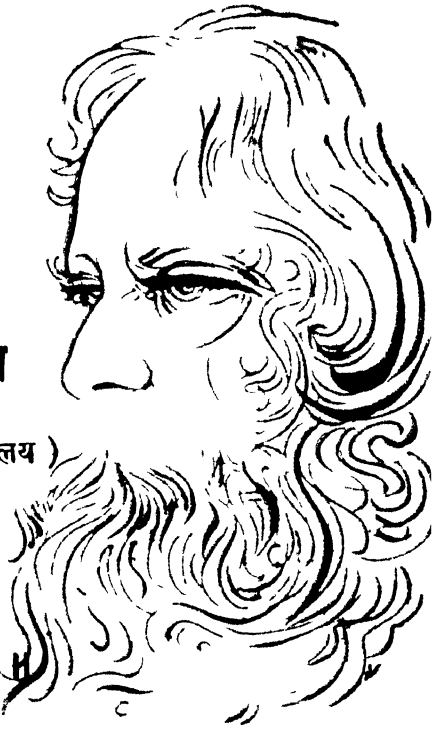

मल्हार मिश्र

कहरवा (मध्य-द्रुत लय)

मेरा मन मेघ का साथी,
उड़ता चले दिगंत की ओर ।
निःसीम शून्य में श्रावण वर्षण संगीत में ।
रिमिझिम-रिमिझिम-रिमिझिम ॥

मेरा मन हंस-बलाका पंख से उड़ जाये,
कदाचित् चमकित तड़ित आलोक में ।
झन् झन् मंजीर बजाये झंझा घोर आनन्द में,
कल-कल-कल करती निर्झरिणी ।
प्रलय आह्वान पुकारे ॥

वायु बहे पूर्व समुन्दर से,
उच्छ्वल छल-छल नदी की तरंगे ।
मेरा मन दौड़े उस मत्त प्रवाह में,
ताल-तमाल अरण्य में ।
क्षुब्ध शाखायें डोले रे ॥

सा	सा	सा	सा	सा	–	रे	रेसा	रे	प	म	पम	म	ग	–	म
मे	रा	म	न	मे	ऽ	घ	काऽ	सा	ऽ	थी	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

	म														
म	प	प	–	प	प	प	–	पम	नि	नि	ध	धनि	प	प	–
उ	ड़	ता	ऽ	च	ले	दि	ऽ	गऽ	न्	त	की	ओऽ	ऽ	र	ऽ
×				०				×				०			

ध															
सां	–	सां	सा	सां	–	सा	सा	सा	–	रे	सा	रे	रे	ग	रे
निः	ऽ	सी	म	शू	ऽ	न्य	मे	श्रा	ऽ	व	न	व	र	ष	ण
×				०				×				०			

								रे		रे		रे		रे	
ग	म	प	प	ग	म	रे	–	म	रे	म	रे	म	रे	म	रे
सं	ऽ	गी	त	मे	ऽ	ऽ	ऽ	रि	मि	झि	म	रि	मि	झि	म
×				०				×				०			

म	म	प	–	–	–	–	प	∧
रि	मि	झि	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	∨
×				०				

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

				प								नि			
म	प	प	प	नि	प	नि	नि	नि	–	सां	रें	सां	प	प	प
मे	रा	म	न	हं	ऽ	स	ब	ला	ऽ	का	ऽ	पं	ऽ	ख	से
×				०				×				०			

										नि				नि	
नि	नि	नि	–	सां	–	–	–	सां	सां	रें	सां	सां	सां	रें	सां
उ	ड़	जा	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	क	दा	चि	त	क	दा	चि	त
×				०				×				०			

नि																
सां	नि	नि	नि	ध	-	नि	ध	प	-	पध	म	प	-	-	-	
च	म	कि	त	त	ऽ	ड़ि	त	जा	ऽ	लोऽ	क	मे	ऽ	ऽ	ऽ	
×				०				×				०				

										ग					
गं	गं	गं	गं	गं	-	गं	गं	गं	मं	मं	मं	रें	-	सां	-
झ	न्	झ	न्	मं	ऽ	जी	र	ब	ऽ	जा	ये	झं	ऽ	झा	ऽ
×				०				×				०			

सा				सा				सा	रे	सा	रे	सां	रें		
रें	-	सां	सां	रें	रें	सां	सां	रें	सा	रें	सां	रें	सां	सां	सां
घो	ऽ	र	आ	न	न्	द्	मे	क	ल	क	ल	क	ल	क	र
×				०				×				०			

नि															
सा	नि	नि	-	नि	ध	पं	-	म	म	प	-	प	प	प	म
ती	ऽ	नि	ऽ	झं	रि	णी	ऽ	प्र	ल	य	ऽ	आ	ह्	वा	न
×				०				×				०			

				म			
प	म	प	म	सां	-	-	-
पु	ऽ	का	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×				०			

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

म	म	प	म	प	प	ध	म	प	प	ध	म	प	-	-	-
वा	यु	ब	हे	पु	र	ब	स	मु	न्	द्	र	से	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

						नि					ध				
प	नि	नि	नि	ध	धनि	ध	पध	म	प	मपध	प	म	प	मग	म
उ	ऽ	च्छ	त	छ	लऽ	छ	लऽ	न	दी	कीऽऽ	त	रं	ऽ	गेऽ	ऽ
×				०				×				०			

				प											
म	प	प	प	नि	प	पनि	प	नि	-	नि	प	नि	-	सां	सां
मे	रा	म	न	दौ	ड़े	उऽ	स	म	ऽ	त्त	प्र	वा	ऽ	ह	मे
×				०				×				०			

प्रथम चार पंक्तियो की पुनरावृत्ति करें।

पीलू मिश्र

दादरा (मध्यलय)

बादल धारा चली गई बाजे विदा का सुर।
गान अपना शेष कर दे जाना बहुत दूर ॥
नाव तेरी आगे बढ़ी,
तरंगों से उलझ पड़ी।
डोले नैया होले होले लहरें बड़ी चतुर,
कदम-केशर बिखर गया वन उपवन में।
भौंरे आज राह भूले भटके निराश में ॥
वन में आज चुप है हवा,
आकाश भी आज धूसर हुआ।
आलोक में आज झलक उठी स्मृति अति मधुर ॥

			प			प	म		ग		
प	प	प	म	पध	मप	म	ग	–	रे	मग	रे
बा	द	ल	धा	राऽ	ऽऽ	च	ली	ऽ	ग	ईऽ	ऽ
×			०			×			०		

						रे					
सा	सा	रे	ग	ग	रे	सा	–	–	–	–	सा
बा	जे	वि	दा	का	ऽ	सु	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			०			×			०		

						ध					
म	प	प	प	प	ध	प	सां	सांनि	ध	प	–
गा	ऽ	न	अ	प	ना	शे	ष	कऽ	र	दे	ऽ
×			०			×			०		

		ध									
प	ध	प	म	गरे	ग	गम	–	–	–	–	–
शे	ष	क	र	देऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

	प		म								
मप	म	–	ग	ग	रे	मग	–	–	रे	सा	रे
जाऽ	ना	ऽ	ब	हु	त	दूऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			०			×			०		

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

प	प	प	प	प	–	प	प	ध	नि	सां	निरे
ना	ऽ	व	ते	री	ऽ	आ	ऽ	गे	ब	ढ़ी	ऽऽ
×			०			×			०		

रें		सा					ध		प		
सां	सां	नि	ध	प	–	पध	प	प	म	ग	रेग
त	रं	ऽ	गों	से	ऽ	उऽ	ल	भ	प	ड़ी	ऽऽ
×			०			×			०		

						सा			ग		
गम	–	–	–	–	ग	ग	ग	–	रे	ग	ग
रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	डो	ले	ऽ	नै	ऽ	या
×			०			×			०		

ग रे	ग	–	ग रे	मग	रे	सा	सा	रे	ग	ग	रे
हो	ले	ऽ	हो	लेऽ	ऽ	ल	ह	रे	ब	ड़ी	च
×			०			×			०		
रे सा	–	–	–	–	सा						
तु	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र						
×			०								

"गान अपना शेष कर दे,··· बादल धारा·····दूर" तक पुनरावृत्ति करें ।

सा नि़	नि़	नि़	नि़	प़	नि़	नि़	सा	सा	सा	सा	रेसा
क	द	म	के	श	र	बि	ख	र	ग	या	ऽऽ
×			०			×			०		
सा नि	नि़	–	नि़	नि प़	नि़	नि़	सा	–	सा	–	–
व	न	ऽ	उ	प	ऽ	व	न	ऽ	मे	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
सा	ग	ग	ग रे	ग	ग	ग रे	ग	ग	ग रे	मग	रे
भौ	ऽ	रे	आ	ऽ	ज	रा	ऽ	ह	भू	ऽऽ	ले
×			०			×			०		
सारे	सा	रे	रे	मग	रे	सारे	सा	–	–	–	–
भऽ	ट	के	नि	राऽ	श	मेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
प	प	प	प	–	प	प	प	ध	नि	सां	निरे
व	न	मे	आ	ऽ	ज	चु	प	है	ह	वा	ऽऽ
×			०			×			०		
रें सां	नि	नि	नि ध	प	प	पध	ध प	म	प म	ग	रेग
आ	का	श	भी	आ	ज	धूऽ	स	र	हु	ऽ	आऽ
×			०			×			०		

म	–	–	–	–	–	(म)ग॒	ग॒	ग॒	(ग॒)रे	ग॒	ग॒
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	लो	क	मे	आ	ज
×			०			×			०		

(ग॒)रे	ग॒	ग॒	(ग॒)रे	मग॒	रे	सारे	सा	रे	ग॒	ग॒	रे
झ	ल	क	उ	ठीऽ	ऽ	स्मृऽ	ति	ऽ	अ	ति	म
×			०			×			०		

(रे)सा	–	–	–	–	सा
धु	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			०		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

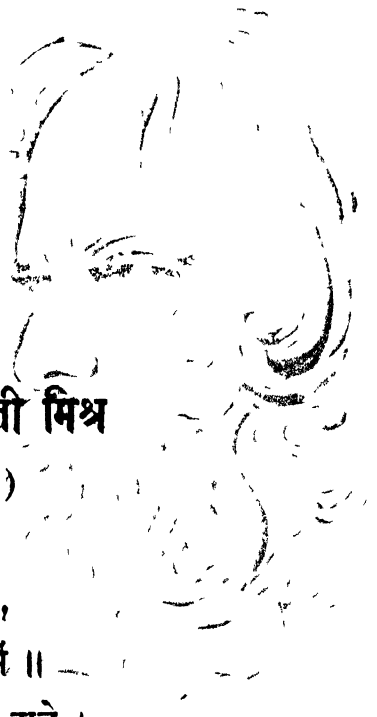

कालिंगड़ा—रामकली मिश्र

* रूपकड़ा (मध्यलय)

शरत आलोक के कमल वन में ।
बाहर होकर बिहार करे,
जो था मेरे मन ही मन में ॥
सोने के कंकन उसके बाजे ।
आज प्रभात किरन में राजे ॥
हवा से काँपे आँचल उसका,
फैले छाया क्षण-क्षण में ॥
आकुल केश के परिमल में ।
शेफाली वन की उदास वायु,
पड़ी रहे तरु तले ॥
हृदय में देखो हृदय डोले ।
बाहर हो वह भुवन को भूले ॥
आज उसने निज नयनों की दृष्टि,
फैला दी नील गगन में ॥

म								प					म		
ग	म	प	नि॒ध	–	प	प	ध॒	म	प	ध॒	मप	ध॒प	ग	–	–
श	र	त	आऽ	ऽ	लो	क	के	क	म	ल	वऽ	ऽन	मे	ऽ	ऽ
×								×							

								म							
ग	म	म	म	–	म	म	–	ग	म	प	गम	पध॒	ध॒	–	–
बा	ह	र	हो	ऽ	क	र	ऽ	बि	हा	र	कऽ	ऽऽ	रे	ऽ	ऽ
×								×							

ध॒			सा	रें					रें		नि				∧
नि	–	सां	रें॒	सां	निसां	ध॒	–	ध॒	रें॒	सांनि	ध॒	ध॒	प	–	मग
जो	ऽ	था	मे	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	म	न	हीऽ	म	न	मे	ऽ	ऽऽ
×								×							∨

प्रथम तीन पंक्तियो की पुनरावृत्ति करे ।

			प		ध॒			नि	ध॒		नि				
ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	–	सां	–	नि	ध॒	सां	नि	ध॒	–	प	–	–
सो	ने	के	कं	ऽ	क	ऽ	न	उ	म	के	बा	ऽ	जे	ऽ	ऽ
×								×							

प														
म	ध॒	ध॒	पध॒	नि॒ध॒प	म	ग	ग	म	नि॒ध॒	–	नि	–	सां	–
आ	ज	प्र	भाऽ	ऽऽऽ	त	कि	र	ण	मेऽ	ऽ	रा	ऽ	जे	ऽ
×								×						

								ग	म		ग॒				
सांग॒	ग॒	ग॒	ग॒	रे	ग॒	–	–	मं	ग॒	ग॒	रें॒	रें॒	सा	–	–
हऽ	वा	से	काँ	ऽ	पे	ऽ	ऽ	आँ	च	ल	उ	स	का	ऽ	ऽ
×								×							

सा											नि				∧
रें॒	सां	–	नि॒	ध॒	ध॒	प	–	प	पध॒	सांनि	ध॒	ध॒	प	–	मग
फै	ले	ऽ	छा	ऽ	या	ऽ	ऽ	तृ	णऽ	ऽऽ	तृ	ण	मे	ऽ	ऽऽ
×								×							∨

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें ।

---

* यह कवि रवीन्द्रनाथ द्वारा सृष्ट आठ मात्रा की (३।२।३) ताल है ।

			म		
सा रे॒ म	म -	म म -	ग म -	गम पध॒	ध॒ - -
आ कु ल	के ऽ	श के ऽ	प रि ऽ	मऽ ऽल	में ऽ ऽ
×			×		

ध॒	सा	रें॒			
नि नि सां	रें॒ -	सां - सां	नि सां सां	सां नि	सां - नि॒
शे फा ली	व ऽ	न ऽ की	उ दा स	वा ऽ	यु ऽ ऽ
×			×		

सा			ध॒		म
नि॒ नि॒ ध॒	ध॒ -	प - ध॒	म प ध॒	मप ध॒प	ग - -
प ड़ी ऽ	र ऽ	हे ऽ ऽ	त रु ऽ	तऽ ऽऽ	ले ऽ ऽ
×			×		

			सां		
ध॒ ध॒ ध॒	नि -	सां सां -	रें॒ रें॒ सां	रें॒सां नि	सां - -
हृ द य	मे ऽ	दे खो ऽ	हृ द य	डोऽ ऽ	ले ऽ ऽ
×			×		

	म		सां	नि	
सां गं॒ गं॒रें॒	गं॒ -	रें॒ सां -	नि सांसां रें॒सां	सां नि	ध॒ - -
बा ह रऽ	हो ऽ	व ह ऽ	भु वन कोऽ	भू ऽ	ले ऽ ऽ
×			×		

सा	सा		सा	सा	
धसां नि सां	रें॒ सां	सां - -	रें॒ सां नि॒नि॒	नि -	ध॒ प -
आऽ ऽ ज	उ स	ने ऽ ऽ	नि ज नय	नो ऽ	की ऽ ऽ
×			×		

प	म				
गं॒ - गं॒रें॒	गं॒ -	रें॒ सां -	सा रे॒ ग	म प	नि॒ध॒ - -
दृ ऽ ष्टिऽ	फै ऽ	ला दी ऽ	नी ल ग	ग न	मेऽ ऽ ऽ
×			×		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

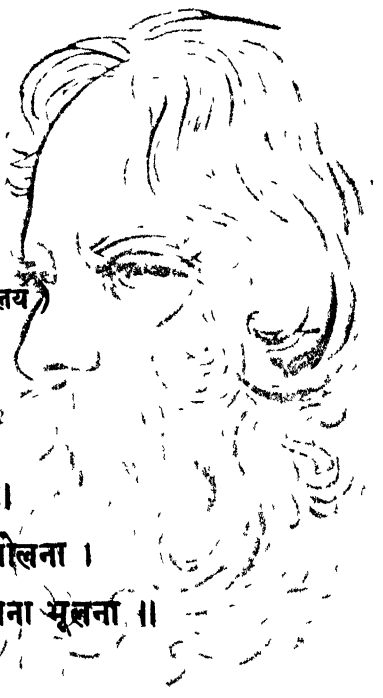

बहार मिश्र

त्रिताल (मध्य-द्रुत लय)

आज वसंत जाग्रत द्वार रे।
तव अवगुंठित कुंठित जीवन में,
उसे विडम्बित ना कर रे॥
आज खोलना हृदय-दल खोलना।
आज भूलना-पराया-अपना भूलना॥
इस संगीत मुखरित गगन में,
तेरी गंध की लहरें उड़ना।
इस भुवन की दिशाओं में आना।
देना फैला माधुरी भार रे॥
अति निविड़ वेदना वन में रे।
आज पल्लव-पल्लव में बाजे रे॥
दूर गगन में किस की राह देखे।
आज व्याकुल वसुंधरा साजे रे॥
मेरे मनमें दखिन वायु लगी है।
किस द्वार-द्वार कर फैला माँगे है॥
यह सौरभ विह्वल रजनी।
उस चरणों धरणीतल जागा है॥
ओहे सुन्दर वल्लभ कान्त।
तव गंभीर आह्वान किसको रे॥

														नि	ध
														आ	ज
												३			

ध	ध														
नि	नि	प	म	पधप	-	मगु	म	नि	-	-	सां	ध	सांनि	सां	नि
व	सं	ऽ	त	जाऽऽ	ऽ	मऽ	त	द्वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रऽ	रे	ऽ
×				२				०				३			

ध	ध														
नि	नि	प	म	पधप	-	मगु	म	नि	-	ध	निध	प	सांनि	सां	नि
व	सं	ऽ	त	जाऽऽ	ऽ	मऽ	त	द्वा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	रऽ	रे	ऽ
×				२				०				३			

								सां				सां			
ध	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सां	नि	सांरें	सां	सां	नि	सां	नि	धनि
त	व	अ	व	गुं	ऽ	ठि	त	कुं	ऽऽ	ठि	त	जी	व	न	मेंऽ
×				२				०				३			

				म				म							
प	पसां	ध	प	गु	-	मगु	म	नि	-	ध	निध	प	सांनि	सां	-नि
उ	सेऽ	ऽ	वि	ड	ऽ	म्बि	त	ना	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	कर	रे	ऽऽ
×				२				०				३			

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

														ध	नि
														आ	ज

						नि									
नि	सां	सां	सां	सां	सांनि	रें	सांरें	नि	नि	सां	-	-	-	सां	सां
खो	ल	ना	हृ	द	यऽ	द	लऽ	खो	ल	ना	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ज
×				२				०				३			

सां								सां							
नि	सां	रें	रें	रें	रेंगुं	रें	सांरें	नि	-	सां	सांरें	सां	नि,	ध	धनि
भू	ल	ना	प	रा	याअ	प	नाऽ	भू	ऽ	ऽ	लऽ	ना	ऽ,	आ	जऽ
×				२				०				३			

	नि		
नि सां सां सां	सां सांनि रें सांरें	नि नि सां -	- - सां सां
खो ल ना ह	द यऽ द लऽ	खो ल नाऽ ऽ	ऽ ऽ आ ज
×	२	०	३

सां		सा	
नि सां रें रें	रें रेंगं रें सांरें	नि - सां सांरें	सां नि॒, धनि॒ प
भू ल न प	रा याआ प नाऽ	भू ऽ ऽ लऽ	ना ऽ, इऽ स
×	२	०	३

म	म	ग॒	
सां - नि॒ पम	प प मग॒ ग॒	म - रे रे	सा - सा साम
सं ऽ गी तऽ	मु ख रिऽ त	ग ऽ ग न	मे ऽ ते रीऽ
×	२	०	३

ग		म	
म - म म	पधप प मग॒ म	नि॒ - पध सांनि	सां -नि॒ ध नि॒
गं ऽ ध की	लऽऽ ह रेंऽ उ	ड़ा ऽ ऽऽ ऽऽ	ना ऽऽ, इ स
×	२	०	३

गं गं गं गं	गं गं मं पं	मंपं मं गं -	- - गं गं
भु व न की	दि शा ओ में	आऽ ऽ ना ऽ	ऽ ऽ दे ना
×	२	०	३

गं मं मं मं	गं रें सां निसां	ध सां नि रें	सां - नि॒ ध
फै ऽ ला मा	धु री भा रऽ	भा ऽ ऽ र	रे ऽ, "आ ज"
×	२	०	३

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

			सा म
			अ नि

		म	
म म म म	म म म म	म प म -	- - म म
नि वि ड़ वे	द ना व न	में ऽ रे ऽ	ऽ ऽ आ ज
×	२	०	३

म प प प	म पं म ग॒	म ध प नि॒	ध – सा साम
प ल् ल व	प ल्ल व मे	बा ऽ जे ऽ	रे ऽ, अ तिऽ
×	२	०	३

		ग	
म म म म	म म म म	म प म –	– – म म
नि बि ड़ वे	द ना व न	में ऽ रे ऽ	ऽ ऽ आ ज
×	२	०	३

म प प प	म प म ग॒	म ध प नि॒	ध – ध धनि
प ल् ल व	प ल्ल व मे	बा ऽ जे ऽ	रे ऽ, दू रऽ
×	२	०	३

नि सां सां सां	सां सांनि रें सांरें	नि नि सां सां	सां –, सां सां
ग ग न मे	कि सऽ की ऽऽ	रा ऽ ह दे	खे ऽ, आ ज
×	२	०	३

सा	म	म	
नि॒ सां नि॒ध प	ग॒ – म प	ग॒ म ग॒ रे	सा – ध नि
व्या कु लऽ व	सुं ऽ ध रा	सा ऽ जे ऽ	रे ऽ, मे रे
×	२	०	३

नि सां सां सां	सां सांनि रें सांरें	नि नि सां –	– – सां सां
म न मे द	खि नऽ वा युऽ	ल गी है ऽ	ऽ ऽ कि स
×	२	०	३

सां		सां	
नि सां रें रें	रें रेंग॒ं रें सांरें	नि – सां सांरें	सां नि॒, ध नि
द्वा र द्वा र	क रऽ फै लाऽ	मों ऽ गे ऽऽ	हैं ऽ, मे रे
×	२	०	३

नि सां सां सां	सां सांनि रेंसां रें	नि नि सां –	– – सां सां
म न में द	खि नऽ वा युऽ	ल गी है ऽ	ऽ ऽ कि स
×	२	०	३

सां			
नि सां रें रें	रें रेंगं रें सांरें	सा नि - सां सांरें	सां नि, धनि प
द्वा र द्वा र	क रऽ फै लाऽ	माँ ऽ गे ऽऽ	है ऽ, यऽ ह
×	२	०	३

प	म		
सां - नि पम	प - मग ग	ग म रे -	सा - सा म
सौ ऽ र भऽ	वि ऽ ह्वऽ ल	र ऽ ज ऽ	नी ऽ उ स
×	२	०	३

		म	
म म म म	मध प मग म	नि -ध पसां नि	सां -नि ध नि
च र णों ध	रऽ नी तऽ ल	जा ऽऽ ऽऽ गा	है ऽऽ, ओ हे
×	२	०	३

सां गं गं गं	गं गं गं मंपं	मं - - गंमंपं	मं गं गं गं
सु न् द र	व ल् ल भऽ	का ऽ ऽ ऽऽन्	त ऽ त व
×	२	०	३

गं मं म मं	गं रें सां निसां	ध सा नि रें	सा - पध ध
ग म् भी र	आऽ ह्वा नऽ	कि स को ऽ	रे ऽ "आऽ ज"
×	२	०	३

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

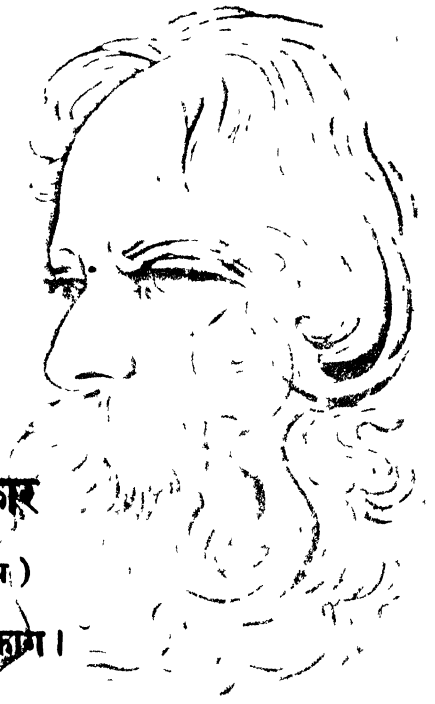

कल्याण प्रकार

कहरवा (द्रुतलय)

ओरे गृहवासी, जाग अब जाग, छाया है फाग।

स्थल–जल वन में छाया–जो–फाग

जाग–अब जाग ॥

लाल हँसी राशि–राशि अशोक पलाश में,
लाल–नशा मेघ छाये प्रभात आकाश में।
नव तरु दलों लगे लाल झटक झाग ॥

वेणु वन मर–मर दखिन वातास में।
तितलियाँ नाचे घास घास में ॥

मधुमाछी माँगती फिरे फूल दखिना,
पाँखो से बजाये निज भिक्षुक वीणा।
माधवी निकुंज वायु मत्त अनुराग ॥

			सा रे
			ओ ऽ

ग रे सा रे	रेध ऽ प -,	सा ध ध ध	प ध नि धप
रे ऽ गृ ह	वाऽ ऽ सी ऽ,	जा ग अ ब	जा ऽ ऽ ऽग
×	०	×	०

प ध नि नि	धप - प -	सां सां नि नि	पध ध ध ध
छा या है ऽ	फाऽ ऽ ग ऽ	थ ल ज ल	वऽ न में ऽ
×	०	×	०

पध ध ध ध	प - प म	ग ग ग रे	सा सा, सा रे
छाऽ या जो ऽ	फा ऽ ग ऽ	जा ग अ ब	जा ग, "ओ ऽ"
×	०	×	०

"ओरे.गृहवासी जाग अब जाग" तक पुनरावृत्ति करें।

प ग प प	प ध प ध	(ध)सां सां सां सांनि	रेंसां - सां सां
ला ल हँ सि	रा शि रा शि	अ शो क पऽ	लाऽ ऽ श मे
×	०	×	०

सां रें गं गं	रें रें सां सां	मिरें रें सां सां	धनि - (ध)प प
ला ल 'म शा	मे घ छा ये	प्रऽ भा त आ	काऽ ऽ श मे
×	०	×	०

गं गं गं रें	रें रें सां सां	सा सा सा रेरे	ग - सा रे
न व त रु	दु लो ल गे	ला ल झ टक	झा ऽ ग ऽ
×	०	×	०

ग ग ग रे	सा सा, सा रे		
जा ग अ ब	जा ग, "ओ ऽ"		
×	०		

"ओरे गृहवासी……फाग" तक पुनरावृत्ति करें।

सा धृ सा सा	सा सा सा रे	ग ग ग ग	ग - ग रे
वे णु व न	म र् म र्	द् खि न वा	ता ऽ स में
×	०	×	०

ग गध ध ध	प मंप ग रे	ग रे सा -	- - - -
ति तऽ लि यों	ना चेऽ घा स	घा स में ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

प ग प ध	प ध प ध	धसां सां सां सांनि	रेंसां - सां -
म धु मा छी	माँ ग ती फि	रेऽ फू ल दऽ	खि ऽ ना ऽ
×	०	×	०

सांग गं गं रें	रें रें सां सां	निरें रें सां सांनि	धनि - धप -
पाँऽ खो से ब	जा ये नि ज	भि ऽ छु कऽ	वीऽ ऽ णाऽ ऽ
×	०	×	०

गं गं गं गं	रे रें सां सां	सा - सा रेरे	ग ग सा रे
मा ध वी नि	कुं ज वा यु	म ऽ त्त अनु	रा ऽ ग ऽ
×	०	×	०

ग ग ग रे	सा सा सा रे		
जा ग अ ब	जा ग "ओ ऽ"		
×	०		

"ओरे गृहवासी······फाग" तक पुनरावृत्ति करें ।

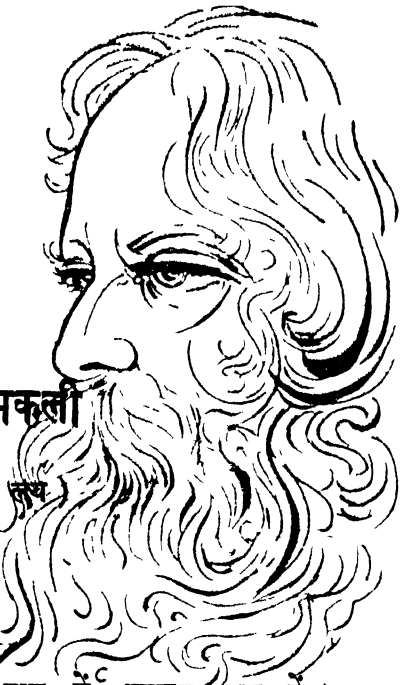

कालिंगड़ा–रामकली

कहरवा (मध्य-द्रुत लय)

अरी बधू सुन्दरी तुम मधु मंजरी ।
पुलकित चंपा का लो अभिनन्दन ॥
पर्ण के पात्र में फागुन रात में ।
मुकुलित मल्लिका माला बंधन ।
लाया हूँ वसंत की गंध सुहानी ।
पलाश कुमकुम चांद का चंदन ॥
पारुल का हिल्लोल, शिरीष का हिन्दोल ।
मंजुल वल्ली के बंकिम कंगन ॥
उल्लास चंचल वेनुवन कल्लोल ।
मलय का कंपित किशलय चुम्बन ॥
तेरी आंखों में लगा नयनों में ।
गगन की नीलिमा स्वप्न का अंजन ॥

म	म	ग	म	प	–	म	प	निधु	–	–	–	–	–	–	–
अ	री	ब	धू	सु	ऽ	न्	द	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

प	धु	धु	प	म	प	धु	प	मग	–	–	–	–	–	–	–
तु	म	म	धु	मं	ऽ	ऽ	ज	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ग	म	ग	रे	ग	ग	म	म	म	प	म	ग	म	नि	नि	नि
पु	ल	कि	त	च	म्	पा	का	लो	ऽ	अ	भि	न	न्	द	न
×				०				×				०			

(नि)धु	प	मग	म	प	–	म	प	निधु	–	–	–	–	–	–	–
अ	री	बऽ	धु	सु	ऽ	न्	द	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

नि	नि	सां	सां	रें	–	सां	सां	नि	–	सां	सां	(नि)सां	नि	(नि)धु	प
प	र्	ण	के	पा	ऽ	त्र	मे	फा	ऽ	गु	न	रा	ऽ	त	में
×				०				×				०			

प	धु	नि	धु	प	प	धु	प	म	–	प	–	पधु	प	म	ग,
मु	कु	लि	त	म	ल्	लि	का	मा	ऽ	ला	ऽ	बंऽ	ऽ	ध	न,
×				०				×				०			

ग	ग	ग	म	प	ऽ	म	प	निधु	–	–	–	–	–	–	–
अ	री	ब	धू	सु	ऽ	न्	द	रीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

धु	धु	धु	धु	नि	नि	सां	सां	रें	–	रें	सां	(सां)नि	नि	सां	सां
ला	या	हूँ	ब	स	न्	त	की	गं	ऽ	ध	सु	हा	ऽ	नी	ऽ
×				०				×				०			

(सां)गं	गं	गं	रें	गं	गं	गं	गं	सां	रें	गं	गं	रेंगं	रें	सां	सां
प	ला	ऽ	श	कु	म	कु	म	चाँ	ऽ	द	का	चं	ऽ	द	न
×				०				×				०			

सांमं मं मं मं	मं मं पं मं	गं रें गं रें	गं रें गं मं
पाऽ रु ल का	हि ल लो ल	शि री ष का	हि न् दो ल
×	०	×	०
गं गं गं गं	रें रें रें रें	सां – सां सां	नि – नि नि
मं ऽ जु ल	व ल् ली के	वं ऽ कि म	कं ऽ ग न
×	०	×	०
धु प मग म	प – म प	निधु – – –	– – – – ∧
अ री बऽ धू	सु ऽ न् द	रीऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ∨
×	०	×	०
सा म म म	म प मप धु	प म गु रे	गु रे गु म
उ ऽ ल्ला स	च न् चऽ ल	वे नु व न	क ल् लो ल
×	०	×	०
गु गु रे सा	सा रे गु म	गु म मगु गु	रे – सा सा
म ल थ का	क म् पि त्	कि श ल य	चु म् ब न
×	०	×	०
धु धु नि सां	सारें – रें नि	सां – – –	– – – –
ते री आँ ऽ	खो ऽ ऽ ऽ	मे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०
धु धु नि सां	सांगं – रें सां	धु नि सां रें	रें नि सां –
ल गा न य	नोऽ ऽ मे ऽ	ल ऽ ऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०
सां गं गं गं	रें रें सां सां	नि सां नि नि	धु धु प प
ग ग न की	नी लि मा ऽ	स्व प् न का	अं ऽ ज न
×	०	×	०
म ग म म	प प म प	निधु – – –	– – – –
अ री ब धू	सु ऽ न् द	रीऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

प्रति विराम स्थल के बाद "अरी बधू··· ····· अभिनन्दन" तक पुनरावृत्ति कर सकते हैं।

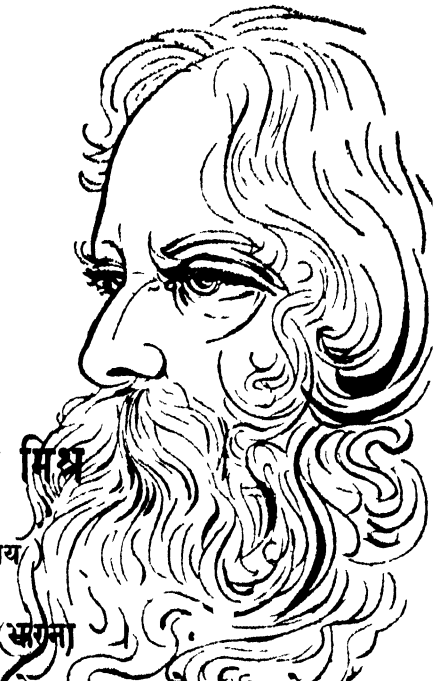

बहार अड़ाना मिश्र

दादरा (मध्यलय)

झरे-झरे-झरे-झरे-झरे रंग का झरना
आओ आओ रे, आओ उस सुधा से मन भरो-ना ॥
वे मुक्त प्लावित धारायें चित्त मृत्यु आवेश खोयें ।
उस रस का परस पाके धरा नित्य नवीन बरना ॥
वह कलध्वनि दखिन हवा फैलाये गगनमय ।
मर-मर ध्वनि करते आये नवीन किशलय ।
छन्द जागे वन की वीणाओं में वसंत पंचम राग में ।
उस स्वर में तू सुर लगा आनन्द गान करो ना ॥

म	म	-	म	म	-	म	म	-	म	म	-
झ	रे	ऽ	झ	रे	ऽ	झ	रे	ऽ	झ	रे	ऽ
×			०			×			०		

			ध					ध			
म	प	ध	प	म	ग	म	ध	प	ध	-	नि,
झ	रे	ऽ	रं	ग	का	झ	ऽ	र	ना	ऽ	ऽ,
×			०			×			०		

						रें					
नि	-	नि	निसां	-	रें	नि	सां	त्रि	ध	-	नि
आ	ऽ	ओ	आऽ	ऽ	ओ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

						सा				रें	
नि	-	सां	सां	-	सां	नि	सां	-	सांरें	सां	सां
आ	ऽ	ओ	उ	ऽ	स	सु	धा	ऽ	सेऽ	म	न
×			०			×			०		

सा					
नि	नि	-	निसां	-	-
भ	रो	ऽ	नाऽ	ऽ	ऽ
×			०		

प्रथम दो पंक्तियो की पुनरावृत्ति करें ।

										ध	नि
										वे	ऽ

										रें	
नि	-	सां	सां	सां	सां	सां	सां	-	सांरें	सां	नि
मु	ऽ	क्त	ला	वि	त	धा	ऽ	ऽ	राऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

						सा					
निसां	-	-	सां	-	सां	नि	-	सां	रें	रें	रें
येंऽ	ऽ	ऽ	चि	ऽ	त्त	मृ	ऽ	त्यु	आ	वे	श
×			०			×			०		

रें	–	सां	रें	–	गं	गं	–	–	गं रें	सां	सां
खो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यें	ऽ	ऽ	ऽ	उ	स
×			०			×			०		

सा नि	सां	सां	रें सांरें	सां	सां	सां	सां नि	नि	ध	प	–
र	स	का	पऽ	र	स	पा	ऽ	के	ध	रा	ऽ
×			०			×			०		

		ध						सा			
प	ध	प	म	ग	म	प	सां	नि	निसां	–	–
नि	ऽ	त्य	न	वी	न	ब	ऽ	र	णाऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

										सा	म
										व	ह
म	म	–	म	म	–	म	म	म	म	म	–
क	ल	ऽ	ध्व	नि	ऽ	द	खि	न	ह	वा	ऽ
×			०			×			०		

				ग		प					
साम	म	म	म	म	प	म	–	–	–	–	म
फैऽ	ला	ये	ग	ग	न	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य
×			०			×			०		

म	प	प	प	प	प	प	प	ध	ध	–	ध
म	र्	म	र्	ध्व	नि	क	र	ते	आ	ऽ	ये
×			०			×			०		

									सा		
ध	ध	नि	नि	नि	सां	सां	–	रेंसां	नि	सां	ध
न	वी	न	कि	श	ऽ	ल	ऽ	यऽ	आ	ऽ	बे
×			०			×			०		

									सा		
ध	ध	नि॒	नि॒	नि॒	सां	सां	-	सां	नि	सां	ध
न	वी	न	कि	श	ऽ	ल	ऽ	यऽ	छ	न्	द
×			०			×			०		

									सां		
ध	ध	-	ध	ध	नि	नि	सां	सां	नि	-	सां
जा	गे	ऽ	व	न	की	वी	णा	ऽ	ओ	ऽ	में
×			०			×			०		

सां											
नि	सां	सां	रें	रें	रें	रें	रें	रें	रें	सां	रें
व	स	न्	त	पं	ऽ	च	म	ऽ	रा	ऽ	ग
×			०			×			०		

			गुं॒								
रेंगुं॒	-	-	रें	सां	सां	ध	ध	-	ध	ध	नि
मेऽ	ऽ	ऽ	छ	न्	द	जा	गे	ऽ	व	न	की
×			०			×			०		

			सा			सा					
नि	सां	सां	नि	-	सां	नि	सां	सां	रें	रें	रें
वी	णा	ऽ	ओं	ऽ	मे	व	स	न्	त	पं	ऽ
×			०			×			०		

रें	रें	रें	रें	सां	रें	रेंगुं॒	-	-	गुं॒रें	सां	सां
च	म	ऽ	रा	ऽ	ग	मेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	उ	स
×			०			×			०		

सां				रें		सा				ध	
नि	सां	सां	सांरें	सां	-	नि॒	सां	नि॒	ध	प	-
सु	र	मे	ऽऽ	तू	ऽ	सु	ऽ	र	ल	गा	ऽ
×			०			×			०		

	ध							सा			
पध	प	प	म	ग	म	प	सां	नि	निसां	-	-
आऽ	न	न्	द	गा	न	क	रो	ऽ	नाऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें। ——

अड़ाना–बहार, मिश्र

कहरवा (द्रुतलय)

अरे आओ रे अब तो मतवारे, झूमें रे ।
आज नव–जीवन का वसंत रे ॥
प्राचीन बंधन तोड़ के भाई ।
चलो वेग से मेरे राही ॥
अपने को तू दिगंत मे खोदे ।
भूल जा तेरे गम सारे ॥
बंधन जितने तोड़ उन्हें तू आनन्द से ।
आज नव जीवन का वसंत रे ॥
अकुल प्राण के सागर तीर पर ।
किसका तुझ को है रे डर ॥
अपना सब कुछ साथ लिये तू ।
चल दे दूर दिशा में रे ॥

			ध नि
			अ रे
नि नि सां रेंसां	नि सां ध नि	नि नि सां –	नि रें सा –
आ ओ रे ऽऽ	ऽ ऽ अ रे	आ ओ रे ऽ	अ ब तो ऽ
×	०	×	०
नि रे सा –	नि – ध नि	प सां सा नि	सा – ध नि
म त वा ऽ	ऽ ऽ रे ऽ	भू ऽ मे ऽ	रे ऽ आ ज
×	०	×	०
नि नि सां –	नि रें सां –	सा म म म	म प प ध
न व जी ऽ	व न का ऽ	व म न् त	रे ऽ, अ रे
×	०	×	०
नि नि सां रेसां	नि सां ध नि	नि नि सां –	– – – – ∧
आ ओ रे ऽऽ	ऽ ऽ अ रे	आ ओ रे ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ |
×	०	×	० V

उपरोक्त अंश की पुनरावृत्ति करें।

ध – ध ध	ध – ध नि	नि नि सां सां	रेसां नि सां –
प्रा ऽ ची न	ब ऽ ध न	तो ड़ के ऽ	भा ऽ ई ऽ
×	०	×	०
सां ध रें रे	रें सां सां सां	नि सां निसा रे	सां नि ध नि –
च लो ऽ ऽ	वे ग से ऽ	मे ऽ रेऽ ऽ	रा ऽ ही ऽ
×	०	×	०
सां मं मं मं	मं गं गं गं	गं पं पं मं	मं गं गं गं
अ प ने ऽ	को ऽ तू ऽ	दि ग न्त मे	खो ऽ दे ऽ
×	०	×	०

		म		गं											
रें	मं	गं	गं	रे	–	सां	नि,	ध	सां	सां	नि	सां	–	ध	नि
भू	ऽ	ल	जा	ते	ऽ	रे	ऽ	ग	म	सा	ऽ	रे	ऽ	आ	ज
×				०				×				०			

						रें									
नि	नि	सां	–	नि	रे	सां	सां	सा	म	म	म	म	प	प	ध
न	व	जी	ऽ	व	न	का	ऽ	व	सं	ऽ	त	रे	ऽ	"अ	रे"
×				०				×				०			

केवल प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

												सा			
सा	म	म	म	म	म	म	प	प	सां	सा	सांसां	नि	–	ध	–
बं	ऽ	ध	न	जि	त	ने	ऽ	तो	ऽ	ड़	उन्	हे	ऽ	तू	ऽ
×				०				×				०			

										रें					
ध	नि	पध	नि	नि	–	नि	नि	नि	रे	सां	नि	नि	ध	ध	प
आ	ऽ	नऽ	न्द	से	ऽ	आ	ज	न	व	जी	ऽ	व	न	का	ऽ
×				०				×				०			

प	म	मग	प	मग	–	–	–								
व	ऽ	मऽ	न्त	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ								
×				०											

ध	–	ध	ध	ध	–	ध	नि	नि	–	सां	सा	रेसां	नि	सां	सा
अ	ऽ	कु	ल	प्रा	ऽ	ण	के	सा	ऽ	ग	र	तीऽ	र	प	र
×				०				×				०			

											रें	सा			नि		
सां	ध	रें	रें	रे	सां	सां	सां	निसां	नि	रें	सां	नि	–	ध	–		
कि	स	का	ऽ	तु	झ	को	ऽ	हैऽ	ऽ	रे	ऽ	ड	ऽ	र	ऽ		
×				०				×				०					

सां	सां	मं	.मं	मं	गं	गं	गं	गं	–	पं	पं	मं	–	गं	गं
अ	प	ना	ऽ	स	ब	कु	छ	सा	ऽ	थ	लि	ये	ऽ	तू	ऽ
×				०				×				०			

गं	रें	मं	गं	रे	रें	सां	नि	ध	सां	सां	नि	सां	–,	ध	नि
च	ल	दे	ऽ	दू	ऽ	र	दि	शा	ऽ	मे	ऽ	रे	ऽ,	आ	ज
×				०				×				०			

						रें									
नि	नि	सा	–	नि	रे	सां	–	सा	म	म	म	म	प	"प	ध"
न	व	जी	ऽ	व	न	का	ऽ	व	स	न	त	रे	ऽ,	"अ	रे"
×				०				×				०			

"अरे आओरे……आनन्द से" तक गाये।

माँड़ मिश्र

कहरवा (द्रुतलय)

दूर गाँव से मटियाला पथ रे, आहा मेरे मन को भुलाये रे।
अरे किसकी ओर बढ़ा के हाथ, लुटकर मिलगया धूल से रे॥

इसने मुझे घर से बाहर किया है,
किस की चाह में पागल किया है।
आहा रे आहा रे—

राही बन गया इसके साथ मैं, कहाँ कहाँ ले जाय रे॥

जाने कौन देश मुझको ले जाये,
कहाँ-कहाँ क्या खेल दिखाये।

भेद बताये कैसे कैसे रे इसकी लीला कौन कहे रे॥

ध़	सा	सा	सा	सा	–	सा	रे	ग	प	प	ध	प	–	म	पम
दू	ऽ	र	गाँ	व	ऽ	से	ऽ	म	टि	या	ऽ	ला	ऽ	प	थऽ
×				०				×				०			
म															
ग	–	–	–	–	–	–	–	ग	–	–	म	प	–	–	धप
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ
×				०				×				०			
												म			
म	–	–	पम	ग	–	सा	रे	ग	ग	ग	म	ग	–	रे	गरे
हा	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	मे	रे	म	न	को	भु	ला	ऽ	ये	ऽऽ
×				०				×				०			
सा	–	–	–	–	–	{ प –	ध – }	प	ध	सां	सा	रे	–	सां	सां
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	{ ऽ अ	ऽ रे }	कि	स	की	ऽ	ओ	ऽ	र	ब
×				०				×				०			
		सा		नि											
सां	–	सां	नि	ध–	–प	ध	म	ध	प	–	–	–	–	–	प
ढ़ा	ऽ	के	ऽ	हाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	थ
×				०				×				०			
				सा											
ध	ध	ध	सां	ध	ध	प	ध	म	प	प	म	ग	–	सा	रे
लु	ट	क	र	मि	ल	ग	या	धू	ऽ	ल	से	रे	ऽ	मे	रे
×				०				×				०			
				म											
ग	ग	ग	भ	ग	–	रे	ग	रेसा	–	–	–	–	–	–	–
म	न	को	भु	ला	ऽ	बे	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
													ध		
ध़	सा	सा	सा	सा	–	सा	रे	ग	प	प	प	प	ध	प	धप
इ	स	ने	ऽ	मु	ऽ	के	ऽ	घ	र	से	ऽ	बा	ऽ	ह	रऽ
×				०				×				०			

प म – मग पम	ग – – –	ग ग ग म	प – प ध
कि ऽ याऽ ऽऽ ×	है ऽ ऽ ऽ ०	कि स की ऽ ×	चा ऽ ह मे ०
म – म प	म – – पम	ग – सा रे	ग – – म
पा ऽ ग ल ×	कि ऽ ऽ ऽऽ ०	या ऽ ऽ ऽ ×	है ऽ ऽ ऽ ०
ग ग रे ग	रेसा – सा म	सा – – –	– –, प ध
आ हा रे ऽ ×	ऽऽ ऽ आ हा ०	रे ऽ ऽ ऽ ×	ऽ ऽ, रा ही ०
ध सां सा सां	रे सा रे सां –	सां – नि नि	नि ध– –प ध नि
ब न ग या ×	इ म के ऽ ०	सा ऽ ऽ थ ×	मेऽ ऽऽ ऽ ऽ ०
ध प – – –	– – – –	ध ध – सा	ध – प ध
रे ऽ ऽ ऽ ×	ऽ ऽ ऽ ऽ ०	क हाँ ऽ क ×	हाँ ऽ ले ऽ ०
मप – – म	ग – सा रे	ग ग ग म	ग – रे ग
जाऽ ऽ ऽ ऽ ×	रे ऽ मे रे ०	म न को भु ×	ला ऽ ये ऽ ०
रेसा – – –	– – प प	प – – ग	प प प ध
रेऽ ऽ ऽ ऽ ×	ऽ ऽ जा ने ०	कौ ऽ ऽ न ×	दे श मु मे ०
ध सां – रें	रें– –सां रेंगं –	रेंसां – – –	– – – –
को ऽ ऽ ले ×	जाऽ ऽऽ ऽऽ ऽ ०	ऽऽ ऽ ऽ ऽ ×	ऽ ऽ ऽ य ०

								ग							
सां	रें	रें	रें	रें	–	सांरे	गं	रें	सां	सां	नि	ध	–प	ध	नि
क	हाँ	ऽ	क	हाँ	ऽ	क्याऽ	ऽ	खे	ऽ	ल	दि	खा	ऽऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
धप	–	–	–	–	–	–	–	प	–	ध	सां	सां	–	सां	–
रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भे	ऽ	द	ब	ता	ऽ	ये	ऽ
×				०				×				०			
सां	–	सां	नि	नि	ध	धध	नि	धप	–	–	–	–	–	–	–
कै	ऽ	से	ऽ	कै	ऽ	सेऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
ध	ध	ध	सां	ध	–	प	ध	म	प	प	म	ग	ग	सा	रे
इ	स	की	ऽ	ली	ऽ	ला	ऽ	कौ	ऽ	न	क	हे	रे,	मे	रे
×				०				×				०			
ग	ग	ग	म	ग	–	रे	ग	रेसा	–	–	–	–	–	–	– ∧
म	न	को	भु	ला	ऽ	ये	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ |
×				०				×				०			V

इच्छानुसार पुनरावृत्ति करें।

यमन–भूपाली

कहरवा (द्रुतलय)

वायु बहे जोर–जोर, बादल घिरे हैं घोर ।
अरे माझी नाव चलाइयो ।।
मैं बाँधू रे पाल, तू पतवार सँभाल ।
हाँई मारो मारो टान हाँईयो ।।
झनके बार-बार शृङ्खल झंकार, यह है न नाव की करुण पुकार ।
टूटे न बंधन चित्त है चंचल नैया को अब तू संभालियो ।।
हाँई मारो मारो टान हाँईयो ।।
गिन–गिन घड़ियां चंचल मनुआँ,
बोलो जाऊँ कहाँ या ना जाऊँ रे ।
संशय सागर मन में उतार,
उद्वेग क्यों है मन में ।
यदि आये झंझा तूफान काला, लुंठित हो चाहे सागर बावला,
तो भी मन में डर को न ला तू गीत मगन हो गाइयो ।
हाँई मारो मारो टान हाँईयो ।।

सा	रे	ग	ग	ग	ग	ग	रे	नि़	सा	रे	रे	रे	रे	रे	रेरे
वा	यु	ब	हे	जो	र	जो	र	बा	द	ऽ	ल	घि	रे	हैं	घोर
×				०				×				०			

										रे					
ध़	नि़	सा	रे	ग	-	ग	रे	नि़	रे	सा	-	-	-	-	-
अ	रे	मा	झी	ना	ऽ	व	च	ला	इ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

साप	प	प	मं	प	मं	प	प	प	नि	नि	ध	पप	मं	ग	ग
मेंऽ	ऽ	बाँ	धु	रे	ऽ	पा	ल	तू	ऽ	प	त	वार	स	म्हा	ल
×				०				×				०			

ग															
गं	गं	गं	गं	रें	रें	सां	प	ध	रें	सां	-	ध	रें	सां	-
हाँ	ई	मा	रो	मा	रो	ता	न	हाँ	इ	यो	ऽ	हाँ	इ	यो	ऽ
×				०				×				०			

ध	रें	सां	-	-	-	-	-
हाँ	इ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०			

प्रथम दो पंक्तियो की पुनरावृत्ति करे ।

प	प	प	ग	प	प	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां	-	सां	सां
झ	न	के	ऽ	बा	र	बा	र	शृं	ऽ	ख	ल	झं	ऽ	का	र
×				०				×				०			

सां	रें	रें	रें	रें	रें	सांरें	गं	गं	गं	-	गं	रें	रें	सां	सां
य	ह	है	न	ना	व	कीऽ	ऽ	क	रु	ऽ	ण	पु	का	ऽ	र
×				०				×				०			

सांगं	गं	गं	गं	रें	रें	सां	सां	रें	-	सां	सां	नि	-	ध	ध
टूऽ	टे	ऽ	न	बं	ऽ	ध	न	चि	ऽ	त	है	चं	ऽ	च	ल
×				०				×				०			

सां	-	नि	नि	ध	ध	प	प	पध	ध	प	-	-	-	-	-
नै	ऽ	या	को	अ	ब	तु	स	म्हाऽ	लि	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ग															
गं	गं	गं	गं	रें	रें	सां	प	ध	रें	सां	–	ध	रें	सां	–
हाँ	ई	मा	रो	मा	रो	टा	न	हाँ	इ	यो	ऽ	हाँ	इ	यो	ऽ
×				०				×				०			

ध	रें	सां	–	–	–	–	∧
हाँ	इ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	|
×				०			v

पूर्व उल्लिखित पुनरावृत्ति करें।

सा	रे	ग	ग	ग	ग	ग	–	ग	–	ग	ग	रे	रे	सा	–
गि	न	गि	न	घ	ड़ि	यों	ऽ	चं	ऽ	च	ल	म	नु	ओं	ऽ
×				०				×				०			

ध़	नि़	सा	रे	ग	ग	ग	ग	रेग	रे	सा	–	–	–	–	–
बो	लो	जा	ऊँ	कँ	हा	या	ना	जाऽ	ऊँ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ग	प	प	प	प	मं	प	प	प	नि	नि	ध	प	मं	ग	ग
सं	ऽ	श	य	सा	ऽ	ग	र	म	न	मे	उ	ता	ऽ	र	ऽ
×				०				×				०			

प	नि	नि	ध	प	मं	ग	मं	मंनि	ध	प	–	–	–	–	–
उ	दू	वे	ग	क्यो	ऽ	है	ऽ	मऽ	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

						ध									
प	ग	प	ध	प	ध	प	ध	धसां	–	सां	सां	सां	–	सां	–
य	दि	आ	ये	झ	न्	झा	ऽ	तूऽ	ऽ	फा	न	का	ऽ	ला	ऽ
×				०				×				०			

सां	रें	रें	रें	सांरें	गं	गं	गं	गं	–	गं	गं	रें	–	सां	सां
लुं	ऽ	ठि	त	होऽ	ऽ	चा	हे	सा	ऽ	ग	र	बा	ऽ	व	ला
×				०				×				०			

सांगं	-	गं	-	रें	रें	सां	-	सांरें	रें	सां	-	नि	नि	ध	-
तोऽ	ऽ	भी	ऽ	म	न	में	ऽ	डऽ	र	को	ऽ	न	ला	तू	ऽ
×				०				×				०			
सां	-	नि	नि	ध	-	प	प	पध	ध	प	-	-	-	-	-
गी	ऽ	त	म	ग	ऽ	न	हो	गाऽ	इ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			
प															
गं	गं	गं	गं	रें	रें	सां	प	ध	रें	सां	-	ध	रें	सां	-
हाँ	इ	मा	रो	मा	रो	टा	न	हाँ	इ	यो	ऽ	हाँ	इ	यो	ऽ
×				०				×				०			
ध	रें	सां	-	-	-	-	- ∧								
हाँ	इ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ |							
×				०			V								

इच्छानुसार पुनरावृत्ति करें।

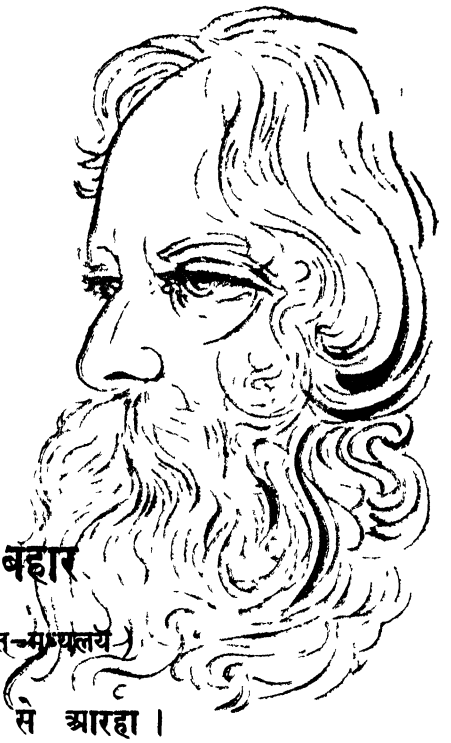

बागेश्री बहार

तेवड़ा (विलंबित-मध्यलय)

मेरे मिलन के लिये तू जाने कब से आरहा ।
चाँद तेरा, तेरा सूरज छिपा रखेगा तुझे कहाँ ॥
जाने कब से सुबह संध्या तव चरण की ध्वनि बाजे ।
दूत तेरा मुझको कब से बुला रहा, बुला रहा ॥
हे पथिक आज मेरी मिलन की बेला में,
हरष मानो जाग रहा है, काँपे मन में ।
मिलन की बेला आई है रे छुटे मेरे काम सारे ।
पवन आये हे महाराज तेरी गंध लेके ॥

सां										ध				म				
रेंसां	रें	सां	|	सां	-	|	त्रि	ध	|	त्रि	प	म	|	त्रि	-प	|	म	ग
मेऽ	रे	ऽ	|	मि	ऽ	|	ल	न	|	के	ऽ	लि	|	ऽ	ऽये	|	तू	ऽ
×			|	२		|	३		|	×			|	२		|	३	

										म								
म	म	प	|	प	म	|	त्रि	प	|	प	मग	मग	|	मरे	-	|	सा	-
जा	ने	ऽ	|	क	ऽ	|	ब	से	|	आ	ऽऽ	ऽऽ	|	रऽ	ऽ	|	हा	ऽ,
×			|	२		|	३		|	×			|	२		|	३	

सा	सानि़	रे	|	रे	-	|	सा	-	|	सा	म	म	|	म	-	|	म	म
चाँ	ऽऽ	द	|	ते	ऽ	|	रा	ऽ	|	ते	ऽ	रा	|	सू	ऽ	|	र	ज
×			|	२		|	३		|	×			|	२		|	३	

														प			ध	
मग	प	-	|	प	प	|	प	-	|	प	पप	ध	|	धत्रि	-	|	त्रिसां	-
छिऽ	पा	ऽ	|	र	खे	|	गा	ऽ	|	तु	झेऽ	क	|	हाँऽ	ऽ	|	ऽऽ	ऽ
×			|	२		|	३		|	×			|	२		|	३	

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करे।

नि	नि	-	|	नि	नि	|	नि	सां	|	सां	सां	सां	|	सां	-	|	सां	-
जा	ने	ऽ	|	क	ब	|	से	ऽ	|	सु	ब	ह	|	सं	ऽ	|	ध्या	ऽ
×			|	२		|	३		|	×			|	२		|	३	

नि	सां	नि	|	रें	रें	|	सां	नि	|	नि	सां	नि	|	सांसां	रें	|	सां	त्रि
त	व	च	|	र	ण	|	की	ऽ	|	ध्व	नि	ऽ	|	बाऽ	ऽ	|	जे	ऽ,
×			|	२		|	३		|	×			|	२		|	३	

म	म	-	|	त्रि	ध	|	त्रि	ध	|	नि	सां	सां	|	सां	-	|	सां	-
जा	ने	ऽ	|	क	ब	|	से	ऽ	|	सु	ब	ह	|	सं	ऽ	|	ध्या	ऽ
×			|	२		|	३		|	×			|	२		|	३	

नि	सां	नि	|	रें	रें	|	सां	नि	|	नि	सां	नि	|	सां	रें	|	सां	त्रिध
त	व	च	|	र	ण	|	की	ऽ	|	ध्व	नि	ऽ	|	बा	ऽ	|	जे	ऽऽ
×			|	२		|	३		|	×			|	२		|	३	

प													
ध	ऩि	–	–	–	–	–	सांऩि	सां	–ऩि	ऩि	ध	ऩि	प
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दूऽ	ऽ	ऽत	ते	ऽ	रा	ऽ
×			२		३		×			२		३	

							ग॒						
प	पम	प	ऩि	प	म	ग॒	म	म	–	मम	प	प	–
मु	झऽ	को	क	ब	से	ऽ	बु	ला	ऽ	रऽ	हा	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

			प		ध	
प	पप	ध	धऩि	–	ऩिसां	–
बु	लाऽ	र	हाऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
×			२		३	

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें ।

रे	रे	ग॒	रे	–	सा	रे	सा	ऩि	सा	रे	–	रे	–
हे	ऽ	ऽ	प	ऽ	थि	क	आ	ऽ	ज	मे	ऽ	री	ऽ
×			२		३		×			२		३	

							म						
रेसा	रे	प	प	–ध	मप	धप	प	म	ग॒	–	–	–	–
मिऽ	ल	न	की	ऽऽ	बेऽ	ऽऽ	ला	ऽ	मे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

रे	रे	ऩि	ध	ऩि	प	ध	मप	मप	ग॒म	रे	–	सा	–
ह	र	ष	मा	ऽ	नो	ऽ	जाऽ	ऽऽ	ऽग	र	ऽ	हा	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सा							म			प			
म	–	–	म	–	म	–	प	पप	ध	धऩि	–	–	–
है	ऽ	ऽ	काँ	पे	पे	ऽ	म	ऽऽ	न	मेऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

नि	नि												
सां	सां	ध॒	नि	–	नि	सां	सां	–	सां	सां	–	सां	–
मि	ल	न	की	ऽ	बे	ला	आ	ऽ	ई	है	ऽ	रे	ऽ
×			२		३		×			२		३	

नि̲	सां	नि̲	सांरें	-	सां	नि	निसां	रें	(सां)रेंसां	सां	-	{ नि̲ ध / ऽ ऽ } { नि̲ध̲ - / रेऽ ऽ }
कू	ऽ	टे	मेऽ	ऽ	रे	ऽ	काऽ	ऽ	ऽम	सा	ऽ	
×			२		३		×			२		३

(प)ध	नि̲	-	-	-	-	-	सांनि̲	सां	नि̲	नि̲	ध	नि̲	प
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	पऽ	व	न	आ	ऽ	ये	ऽ
×			२		३		×			२		३	

(म)नि̲	-	म	म	ग̲	म	ग̲	(ग̲)म	म	-	मम	प	प	-
हे	ऽ	म	हा	ऽ	रा	ज	ते	री	ऽ	गंऽ	ऽ	ध	ऽ
×			२		३		×			२		३	

पध	(प)ध	ध	(प)धनि̲	-	(ध)नि̲सां	-	Λ
लेऽ	ऽ	के	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	
×			२		३		V

प्रथम दो पंक्तियो की पुनरावृत्ति करें।

पीलू खम्माज

कहरवा (विलम्बित)

तुम कुछ दे जाओ,
मेरे प्राणों में गोपन में।
फूल की गंध से, वंशी की धुन से,
मर-मर मुखरित पवन में॥
तुम कुछ ले जाओ,
वेदना से वेदन में—
जो मेरे अश्रु हँसी में लीन,
जो वाणी नीरव नयनों में॥

			(नि) पनि ध पर्म
			तुऽ म कुऽ

धप म ग म	प – – प	प प म ग	म नि ध नि
छुऽ ऽ दे ऽ	जा ऽ ऽ ओ	ऽ ऽ मो र	प्रा ऽ ण ऽ
×	०	×	०

(नि) ध – म ग	म नि (नि) ध नि	पध निसां निरें सांरेंसां	– पनि (नि) ध पर्म
में ऽ गो ऽ	प ऽ न ऽ	मेंऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽऽ	ऽ तुऽ म कुऽ
×	०	×	०

धप म ग म	प प – प	नि सां निसां रेंगं	(गं) रें रें – नि
छुऽ ऽ दे ऽ	जा ओ ऽ, फू	ल की गऽ न्ऽ	ध से ऽ वं
×	०	×	०

सां रें धसां निसांनिध	(ध) मं प – प	नि सां निसां रेंगं	(गं) रें रे – नि
शी की धुऽ ऽऽऽऽ	न से ऽ, फू	ल की गऽ न्ऽ	ध से ऽ व
×	०	×	०

सां रें धसां निसांनिध	(ध) मं प – –	प नि नि नि	नि नि नि नि
शी की धुऽ ऽऽऽऽ	न से ऽ ऽ	म र् म र	मु ख रि त
×	०	×	०

(नि) ध नि ध सां	निसां रेंसांनि सां –	– (नि) नि ध पर्म	धप म ग म
प ऽ व ऽ	नऽ मेंऽऽ ऽ ऽ	ऽ तु म कुऽ	छुऽ ऽ दे ऽ
×	०	×	०

प – – प	– सा सा रे	रे – ग –	– म मध (ध) प
जा ऽ ऽ ओ	ऽ तु म कु	छु ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ लेऽ ऽ
×	०	×	०

		ऩि⌒	
मग रेग – –	गऩि ऩि ऩि ऩि	ध – म –	ध ऩिसां धसां ऩिसांऩिध
जाऽ ओऽ ऽ ऽ	वेऽ द् ना ऽ	से ऽ ऽ ऽ	वे ऽऽ द्ऽ ऽऽऽन
×	०	×	०

ध			ध
प – – –	– सा सा रे	रे – ग –	– म मध प
मे ऽ ऽ ऽ	ऽ तु म कु	छ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ लेऽ ऽ
×	०	×	०

		गं	
मग रेग – –	– प नि सां	निसां रेंगं रें –	सांनि नि सां रें
जाऽ ओऽ ऽ ऽ	ऽ जो मे रे	अऽ ऽऽ श्रु ऽ	ऽऽ हँ सि में
×	०	×	०

रें		नि⌒	नि⌒
ध सांऩिध पमं प	पनि नि नि नि	नि नि ध नि	ध सां निसां रेंसां
ली ऽऽऽ ऽऽ न	जोऽ वा णी नी	र व न ऽ	य ऽ नोंऽ ऽऽ
×	०	×	०

	नि		
नि सां – –	– ऩि ध पमं	धप म ग म	प – – प
मे ऽ ऽ ऽ	ऽ तु म कुऽ	छ ऽ दे ऽ	जा ऽ ऽ ओ
×	०	×	०

इच्छानुसार पुनरावृत्ति करें।

भैरवी–मिश्र

दादरा (मध्य–द्रुतलय)

हिंसा से मत्त पृथ्वी नित्य निठुर द्वन्द्व ।
घोर कुटिल पंथ उसका, लोभ जटिल बंध ॥
तेरा नव जन्म माँगे कातर सब प्राणी ।
करो त्राण महाप्राण लाओ अमृतवाणी ॥
विकसित करो प्रेमपद्म चिरमधु निष्यंद ।
शांत हे मुक्त हे, हे अनंत पुण्य ॥
करुणाघन धरणीतल करो कलक शून्य ॥

क्रंदनमय निखिल भुवन ताप दहन दीप्त ।
विषय–विष–विकार जीर्ण खिन्न अपरितृप्त ॥
देश–देश तिलक लगाये, रक्त कलुष ग्लानि ।
तव मंगल शंख लाओ, तव दक्षिण पाणि ॥
तव शुभ संगीत–राग, तव सुन्दर छन्द ।
शांत हे मुक्त हे, हे अनंत पुण्य ॥
करुणाघन धरणीतल करो कलंक शून्य ॥

सा	धु	धु	धु	प	–	प	–	प	प	मं	प
हि	ऽ	सा	ऽ	से	ऽ	म	ऽ	त्त	पृ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
निधु	–	–	नि	सां	रें	नि	–	गं	रें	रें	सां
थ्वी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नि	ऽ	त्य	नि	ठु	र
×			०			×			०		
सां	नि	सां	–	–	–	सां	गं	गं	रें	सां	सां
द्व	न्	द	ऽ	ऽ	ऽ	घो	ऽ	र	कु	टि	ल
×			०			०			०		
सां	रें	नि	नि धु	धु	प	मप	गु	गु	गु	म	गु
पं	ऽ	थ	उ	स	का	लोऽ	ऽ	भ	ज	टि	ल
×			०			×			०		
रे	–	–	सा	–	–	∧					
बं	ऽ	ऽ	ध	ऽ	ऽ	|					
×			०			V.					

"हिसा से मत्त पृथ्वी" तक पुनरावृत्ति करें।

धु	–	धु	–	धु	नि	नि	सां	सां	सां	–	सां
ते	ऽ	रा	ऽ	न	व	ज	न्	म	माँ	ऽ	गे
×			०			×			०		
सां	रें	रें	रे	रें	सां	सांरें	नि	–	सां	–	–
का	ऽ	त	र	स	ब	प्राऽ	ऽ	ऽ	णी	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
सांगं	गं	–	गं	रें	गं	रेंमं	म गं	–	रें	–	सां
कऽ	रो	ऽ	त्रा	ऽ	ण	मऽ	हा	ऽ	प्रा	ऽ	ण
×			०			×					

नि	गं	गं	रें	सां	सां	नि	सांरेंसां	निसां	निधु	–	–
ला	ऽ	यो	अ	मृ	त	बा	ऽऽऽ	ऽऽ	णीऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

धु	सां	सां	सां	रें	सां	नि	सां	नि	धु	–	प
वि	क	सि	त	क	रो	प्रे	ऽ	म	प	ऽ	द्म
×			०			×			०		

प	नि	नि	नि	धु	प	^प^म	प	^प^म	–	–	–
चि	र	म	धु	नि	ऽ	ष्य	न्	द	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

सा	सा	रे	ग	–	–	रे	रे	ग	म	–	प
शा	न्	त	हे	ऽ	ऽ	मु	क्त	त	हे	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

^प^म	नि	नि	धु	धु	प	म	प	^प^म	–	–	–
हे	ऽ	अ	न	न्	त	पु	ऽ	ण्य	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

म	प	^प^म	नि	धु	प	म	पम	ग	रे	ग	ग
क	रु	णा	ऽ	घ	न	ध	रऽ	णी	ऽ	त	ल
×			०			×			०		

म	म	म	सा	रे	ग	रे	–	सा	–	–	–
क	रो	क	लं	ऽ	क	शू	ऽ	न्य	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

"हिंसा से·····बंध" तक पुनरावृत्ति करें।

सा	धु	धु	धु	प	म	प	पनि	धु	धु	प	ग
क्र	न	द	न	म	य	नि	खिऽ	ल	भु	व	न
×			०			×			०		

प	नि	नि	धु	धु	प	मप	प	म	–	–	–
ता	ऽ	प	द	ह	न	दीऽ	पूं	त	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
प	पनि	नि	धु	धु	प	मप	–	म	गु	रे	गु
वि	षऽ	य	वि	ष	वि	काऽ	ऽ	र	जी	र्	ण
×			०			×			०		
म	म	म	सा	रे	गु	गु रें	रे	सा	–	–	–
खि	न्	न	अ	प	रि	तृ	प्	त	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
धु	–	धु	धुनि	धु	नि	नि	सां	सा	सां	सां	सां
दे	ऽ	श	देऽ	ऽ	श	ति	ल	क	ला	गा	ये
×			०			×			०		
सां	रें	रें	रें	सां	सां	सांरें	नि	–	सां	–	–
र	क्	त	क	लु	ष	ग्लाऽ	ऽ	ऽ	नि	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
सां	गं	गं	–	गंरें	गं	रे	मं	मं गं	रें	–	सां
त	व	मं	ऽ	गऽ	ल	शं	ऽ	ख	ला	ऽ	यो
×			०			×			०		
नि	निगं	गं	–	रें	सां	सा नि	सांरेंसां	निसां	निध	–	–
त	वऽ	द	ऽ	क्ति	ण	पा	ऽऽऽ	ऽऽ	णिऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
धु	सां	सां	सां	सारें	सां	सां नि	सां	नि	धु	–	प
त	व	शु	भ	संऽ	ऽ	गी	ऽ	त	रा	ऽ	ग
×			०			×			०		

प	पनि	नि	–	ध	प	प म	प	म	–	–	–
त ×	वऽ	सुं	ऽ ०	द	र	छं ×	ऽ	द	ऽ ०	ऽ	ऽ
सा	सा	रे	ग	–	–	रे	रे	ग	म	–	प
शा ×	न्	त	हे ०	ऽ	ऽ	मु ×	क्	त	हे ०	ऽ	ऽ
प म	नि	नि	नि ध	ध	प	म	प	प म	–	–	–
हे ×	ऽ	अ	न ०	न्	त	पु ×	ऽ	ण्य	ऽ ०	ऽ	ऽ
म	प	प म	नि	ध	प	म	पम	ग	रे	ग	ग
क ×	रु	णा	ऽ ०	घ	न	ध ×	रऽ	णी	ऽ ०	त	ल
म	म	म	सा	रे	ग	ग रे	–	सा	–	–	– ∧
क ×	रो	क	लं ०	ऽ	क	शू ×	ऽ	न्य	ऽ ०	ऽ	ऽ ∨

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

आसावरी–भैरवी मिश्र

झपताल (मध्यलय)

होगी जय, होगी जय, होगी जय रे ।
ओहे वीर हे निर्भय ।
चिर प्राण, जयी प्राण जयी रे आनन्दगान ।
जयी प्रेम, जयी क्षेम जयी ज्योतिर्मय रे ॥
यह आँधार होगा क्षय, होगा क्षय रे ।
ओहे वीर हे निर्भय ।
तजो नींद खोलो आँख अवसाद करो राख ।
आशा–अरुणालोक हो उदय रे ॥

									सा
									हो
रे	म	म	म	म	गम	प	प	प	प
गी	ऽ	ज	य	हो	गीऽ	ऽ	ज	य	हो
×		२			०		३		
प					नि		नि		
ध	सां	सां	–	रें	सां	–	ध	–	ध
गी	ऽ	ज	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ओ
×		२			०		३		
		ध					ध		
ध	–	सां	सां	ध	ध	–	गं	गं	सा
हे	ऽ	वी	र	हे	नि	ऽ	र्भ	य,	हो
×		२			०		३		
रे	म	म	म	म	गम	प	प	प	प
गी	ऽ	ज	य	हो	गीऽ	ऽ	ज	य	हो
×		२			०		३		
प					नि		नि		
ध	सां	सां	–	रें	सा	–	ध	–	ध
गी	ऽ	ज	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ओ
×		२			०		३		
		ध					ध		
ध	–	सां	सां	सां	सां	ध	गं	गं,	ध
हे	ऽ	वी	र	हे	नि	ऽ	र्भ	य,	चि
×		२			०		३		
		ध		सा	सां		नि		
ध	–	सां	सां	रें	रें	नि	सां	सां	सां
र	ऽ	प्रा	ण	ज	यी	ऽ	प्रा	ण	ज
×		२			०		३		

नि		ध		गं					
सां	ध	गं	–	मं	गं	रें	सां	सां	ध
थी	ऽ	रे	ऽ	आ	न	न्द	गा	न	चि
×		२			०		३		
		ध		सा	सा		नि		
ध	–	सां	सां	रें	रें	नि	सां	सां	सां
र	ऽ	प्रा	ण	ज	यी	ऽ	प्रा	ण	ज
×		२			०		३		
नि		ध		गं					सा
सां	ध	गं	–	मं	गं	रें	सां	सां	गं
थी	ऽ	रे	ऽ	आ	न	न्द	गा	न	ज
×		२			०		३		
गं	रें	गं	गं	गं	गं	रें	गं	गं	गं
यी	ऽ	प्रे	म	ज	यी	ऽ	क्षे	म	ज
×		२			०		३		
		रें							
गं	रें	मं	–	गं	गं	रें	रें	सां	सां
यी	ऽ	ज्यो	ऽ	ति	र्मं	य	रे	ऽ	ओ
×		२			०		३		
नि		ध			सां		ध		∧
सां	ध	सां	सां	सां	ध	–	गं	गं	सां
हे	ऽ	वी	र	हे	नि	ऽ	भं	य	"हो"
×		२			०		३		V

उपरोक्त अंश की पुनरावृत्ति करें।

									सासा
									यह
रे	म	म	म	म	गम	प	प	प	प
अँ	ऽ	धा	र	हो	गाऽ	ऽ	क्ष	य	हो
×		२			०		३		

प	ध	ध	-	ध	(ध)नि	-	ध	प	प
गा	ऽ	त्त	ऽ	य	है	ऽ	ऽ	ऽ	ओ
×		२			०		३		

प	ग	ध	ध	ग	गरे	-	सा	सा	सासा
हे	ऽ	वी	र	हे	निऽ	ऽ	भं	य,	यह
×		२			०		३		

रे	म	म	म	म	गम	प	प	प	प
आँ	ऽ	धा	र	हो	गाऽ	ऽ	त्त	य	हो
×		२			०		३		

प	ध	ध	-	ध	(ध)नि	-	ध	प	प
गा	ऽ	त्त	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ओ
×		२			०		३		

(प)ध	-	(प)धनि	नि	ध	धनिध	-	प	प	ध
हे	ऽ	वीऽ	र	हे	निऽऽ	ऽ	भं	य,	त
×		२			०		३		

ध	-	(ध)सां	सां	(सा)रें	(सा)रें	नि	(नि)सां	सां	सां
जो	ऽ	नीं	द	खो	लो	ऽ	आँ	ख	अ
×		२			०		३		

(नि)सा	ध	(ध)गं	-	(गं)मं	गं	रें	सां	सां,	ध
व	ऽ	सा	ऽ	द	क	रो	रा	ख,	त
×		२			०		३		

ध	-	(ध)सां	सां	(सां)रें	(सां)रें	नि	(नि)सां	सां	सां
जो	ऽ	नीं	द	खो	लो	ऽ	आँ	ख	अ
×		२			०		३		

ऩि		धु		गं					सां
सां	धु	गं	-	मं	गं	रें	सां	सां,	गं
व	ऽ	सा	ऽ	द	क	रो	रा	ख,	आ
×		२			०		३		

गं	रें	गं	-	गं	गं	रें	गं	-	गं
शा	ऽ	ऽ	ऽ	अ	रु	ण	लो	ऽ	क
×		२			०		३		

		रें							
गं	रें	मं	-	गं	गं	रें	रें	सां	सां
हो	ऽ	ऽ	ऽ	उ	द	य	रे	ऽ	ओ
×		२			०		३		

ऩि		धु			सा		धु		
सां	धु	सां	सां	सां	धु	-	गं	गं,	सा
हे	ऽ	वी	र	हे	नि	ऽ	भ	य,	"हो"
×		२			०		३		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें ।

बिहाग

त्रिताल (विलंबित)

तुम्हारे असीम में प्रान–मन लेकर जितभी दूर मैं धाऊँ ।
कहीं दुख, कहीं मृत्यु, कहीं विच्छेद ना पाऊँ ॥
मृत्यु वह लेवे मृत्यु का रूप, दुख होये हे दुःख का कूप ।
तुम से जब मैं होके विमुख अपनी ओर निहारूँ ॥
हे पूर्ण तव चरणों में जो कुछ है सब निर्भयता में ।
नहीं है भय, वह केवल मुझे, निशिदिन अब रोऊँ ॥
अन्तर ग्लानि संसार–भार पलक पड़ते ही कहाँ एकाकार,
जीवन में यदि स्वरूप तेरा देखने मैं पाऊँ ॥

प प नि ध	सां सां नि –	प पर्म धप पम	म गमप ग ग
तु म्हा रे अ	सी म मे ऽ	प्रा णऽ मऽ नऽ	ले ऽऽऽ क र
०	३	×	२

प (कण)			रे (कण)
ग म नि नि	ध – प –	म – गम प	ग – सा सा
जि त नी दू	र ऽ मैं ऽ	धा ऽ ऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऊँ
०	३	×	२

			र्म ध (कण)
सा सा म –	म – ग –	ग ग प र्म	प – प –
क हीं ऽ ऽ	दुः ऽ ख ऽ	क हीं ऽ ऽ	मृ ऽ त्यु ऽ
०	३	×	२

		ध नि (कण)	ध ध (कण)
प नि – नि	नि – नि सां	नि – धनिसां –	नि – प प
क हीं ऽ वि	च्छे ऽ द ऽ	ना ऽ पाऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऊँ
०	३	×	२

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें ।

प – नि निनि	नि – नि –	सां – रें नि	सां – – सां
मृ ऽ त्यु वह	ले ऽ वे ऽ	मृ ऽ त्यु का	रू ऽ ऽ प
०	३	×	२

			प (कण)
सा – सां –	सां सां सांरेंसां –	नि – प प	नि – – नि
दुः ऽ ख ऽ	हो ये हेऽऽ ऽ	दुः ऽ ख का	कू ऽ ऽ प
०	३	×	२

सां गं रें –	सां सां नि –	प ध प म	ग – – ग
तु म से ऽ	ज ब मैं ऽ	हो ऽ के वि	मु ऽ ऽ ख
०	३	×	२

		ध नि (कण)	ध ध (कण)
ग म प नि	नि नि नि सां	नि – धनिसां –	नि – प प
अ प नी ऽ	ओ र नि ऽ	हा ऽ ऽऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ रूँ
०	३	×	२

सा	सा	प	प	प	–	प	–	प	प	प	–	प	ध	म	–
हे	पू	ऽ	र्ण	त	ऽ	व	ऽ	व	र	णो	ऽ	मे	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

												ध			
प	नि	नि	नि	नि	–	नि	नि	सां	सां	सां	सांनि	नि	–	प	–
जो	ऽ	कु	छ	है	ऽ	स	ब	नि	र	भ	यऽ	ता	ऽ	मे	ऽ
०				३				×				२			

प															
सां	सां	सां	–	नि	–	–	ध	पप	ध	प	पम	म	–	ग	–
न	ही	है	ऽ	भ	ऽ	ऽ	य	वह	के	व	लऽ	मु	ऽ	झे	ऽ
०				३				×				२			

											रे				
ग	ग	ग	ग	ग	म	प	म	ग	–	–	–	सा	–	–	सा
नि	शि	दि	न	अ	ऽ	ऽ	ब	रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ॐ
०				३				×				२			

प	प	नि	नि	नि	–	नि	–	सां	–	रें	नि	सां	–	–	सां
अ	न्	त	र	ग्ला	ऽ	नि	ऽ	सं	ऽ	सा	र	भा	ऽ	ऽ	र
०				३				×				२			

												प			
सां	सां	सा	सां	सा	सां	सांरेंसां	–	नि	नि	प	प	नि	–	–	नि
प	ल	क	प	ड़	ते	हीऽऽ	ऽ	क	हाँ	ए	का	का	ऽ	ऽ	र
०				३				×				२			

	सा														
सां	गं	रें	रें	सां	–	नि	–	प	ध	प	म	ग	–	–	म
जी	व	न	में	य	ऽ	दि	ऽ	स्व	रू	प	ते	रा	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

								ध		नि		ध		ध	
ग	म	प	नि	नि	–	–	सां	नि	–	धनिसां	–	नि	–	प	प
दे	ख	ने	ऽ	मैं	ऽ	ऽ	ऽ	पा	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ॐ
०				३				×				२			

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें ।

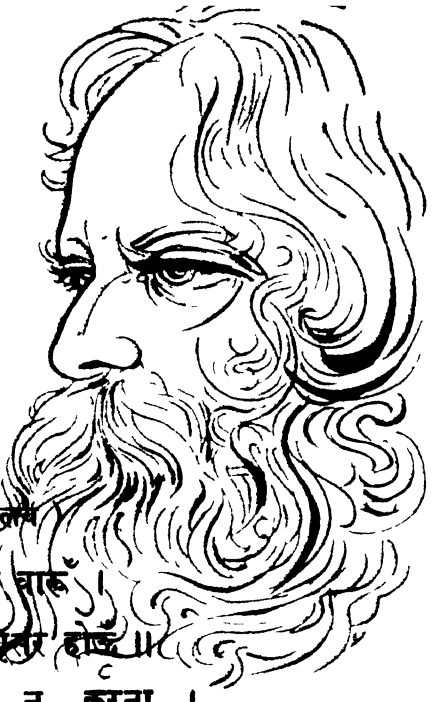

कीर्त्तनांग

कहरवा (मध्य-द्रुत लय)

उस आसन तले माटी पर मैं अपने को डालूँ ।
तेरे चरण की धूलि-कणों से मैं धूसर होऊँ ॥
मुझको यों मान देकर दूर न करना ।
सारा जीवन मुझको यों भुलावा न देना ॥
अ-मान सही पर तेरे पद तले खींचे ही रहूँ ।
तेरे चरण की धूलि-कणों से मैं धूसर होऊँ ॥
रहूँ मैं तेरे यात्री-दल के पीछे ।
स्थान देना मुझे तुम सब के नीचे ॥
प्रसाद हेतु कितने जन हैं दौड़े आये ।
चाह नहीं कुछ मुझको केवल दर्शन ही भाये ॥
अन्त में जो अवशेष बचे मैं वह-ही लेऊँ ।
तेरे चरण की धूलि-कणों से मैं धूसर होऊँ ॥

			रे ग
			उ स
म – प प	मप ध प –	– ध म प	ग म रे ग
आ ऽ स न	तऽ ऽ ले ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ उ स
×	०	×	०
म – प प	मप ध –	प ध नि सांनि	ध निध प ध
आ ऽ स न	तऽ ऽ ले ऽ	मा ऽ टी ऽऽ	प रऽ मै ऽ
×	०	×	०
ध सां सां –	नि सांनि ध निध	प ध म प	ग म रे ग
अ प ने ऽ	को ऽऽ वा ऽऽ	रूँ, ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ, उ स
×	०	×	०
म – प प	मप ध प –	– ध म प	ग म रे ग
आ ऽ स न	तऽ ऽ ले ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ उ स
×	०	×	०
म – प प	मप ध प –	सां – सां –	सां सां सां सां
आ ऽ स न	तऽ ऽ ले ऽ,	ते ऽ रे ऽ	च र ण की
×	०	×	०
रें सां रें सां	रें सां सां नि	नि सां सां –	नि सांनि ध निध
धू ऽ लि ऽ	क णो से ऽ	धू ऽ स ऽ	र ऽऽ हो ऽऽ
×	०	×	०
प ध म प	ग म रे ग ∧		
ऊँ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ, "उ स" ‖		
×	० v		

सां सां सां -	सां - - -	सां - सांरें सां	सां - सांसां रेंसां
मु झ को ऽ	यो ऽ ऽ ऽ	मा ऽ ऽन दे	ऽ ऽ कऽ ऽर
×	०	×	०

नि सां नि धप	प ध पध सां	नि - - -	- - धप -
दू ऽ र नऽ	क ऽ रऽ ऽ	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ ऽ
×	०	×	०

प - पध निसां	नि - धप प	- - - -	- - प प
सा ऽ राऽ ऽऽ	जी ऽ वऽ न	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ओ हे
×	०	×	०

	सा		ध
प - पध निसां	नि - धप प	प ध ध -	ध - नि धप
सा ऽ राऽ ऽऽ	जी ऽ वऽ न	मु झ को ऽ	यो ऽ ऽ ऽऽ
×	०	×	०

प नि नि सांनि	ध नि॒ध प ध	प - - -	- - - -
भु ऽ ला वाऽ	न ऽऽ दे ऽ	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

ग म म प	प प प प	प - पध पम	प ध॒ ध॒नि॒ प
अ ऽ मा ऽ	स ही प र	ते ऽ रेऽ ऽऽ	प द तऽ ले
×	०	×	०

प - प ध॒	नि॒ -ध॒ नि॒ ध॒प	प - - -	- - - -
खीं ऽ ऽ ऽ	चे ऽऽ र ऽऽ	हूं ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

सां - सां -	सां सां सां सां	रें सां रें सां	रें सां सां नि

नि सां सा – | नि सानि ध निध | प ध म प | ग म, रे ग
धू ऽ स ऽ | र ऽऽ हो ऽऽ | ॐ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ "छ स"
× | ० | × | ०

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें ।

सा – सा सा | रे – रे ग | म – – ध | प धप म प
र ऽ हूँ मैं | ते ऽ रे ऽ | या ऽ ऽ त्री | द ऽऽ ल के
× | ० | × | ०

ग – – म | म – म प | प – – – | – – – –
पी ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | छे ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

ध
पध निसां सां सा | नि – प प | प ध – – | – – नि धप
स्थाऽ ऽऽ न दे | ना ऽ मु झे | ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ प्र भुऽ
× | ० | × | ०

सा ध
पध निसां सां सां | नि – प प | प ध – – | ध – ध –
स्थाऽ ऽऽ न दे | ना ऽ मु झे | ऽ ऽ ऽ ऽ | तु ऽ म ऽ
× | ० | × | ०

सा – सा सा | रे ग म प | ग – – – | – – – –
स ऽ ब के | नी ऽ ऽ ऽ | चे ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

सां – सां सां | सां – सां – | सां रें सां – | सां – सांसां रेंसां
प्र ऽ सा द | हे ऽ तु ऽ | कि त ने ऽ | ज ऽ नऽ ऽऽ
× | ० | × | ०

नि सां नि धप | प ध पध निसां | नि – – – | – – धप –
दौ ऽ ड़े ऽऽ | आ ऽ ऽऽ ऽऽ | ये ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽऽ ऽ

						ध									
पप	-	पध	निसा	नि	-	प	-	-	-	-	-	-	-	प	प
चाह	ऽ	नऽ	हींऽ	कु	ऽ	छ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	हे
×				०				×				०			

						ध								ध	
पप	-	पध	निसां	नि	-	प	-	प	ध	ध	-	ध	-	नि	धप
चाह	ऽ	नऽ	हींऽ	कु	ऽ	छ	ऽ	मु	झ	को	ऽ	के	ऽ	व	लऽ
×				०				×				०			

प	नि	नि	सांनि	ध	-	ध	निध	प	-	-	-	-	-	-	-
द	र	श	नऽ	ही	ऽ	भा	ऽऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ग	म	म	प	प	-	प	प	प	-	ध॒	म	प	ध	ध॒नि॒	प
अ	न्	त	मे	ओ	ऽ	अ	ब	शे	ऽ	ष	ब	चे	ऽ	मैंऽ	ऽ
×				०				×				०			

पप	-	प	ध	नि॒	-ध॒	नि॒	ध॒प	प	-	-	-	-	-	-	-
वह	ऽ	ही	ऽ	ले	ऽऽ	ऊँ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

सां	-	सां	-	सां	सां	सां	सां	रें	सां	रें	सां	रें	सां	सां	नि
ते	ऽ	रे	ऽ	च	र	ण	की	धू	ऽ	लि	ऽ	क	णो	से	ऽ
×				०				×				०			

नि	सां	सां	-	नि	सांनि	ध	नि॒ध	प	ध	म	प	ग	म,	रे	ग
धू	ऽ	स	ऽ	र	ऽऽ	हो	ऽऽ	ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	“उ	स”
×				०				×				०			

“उस आसन·········धूसर होऊँ” तक पुनरावृत्ति करें।

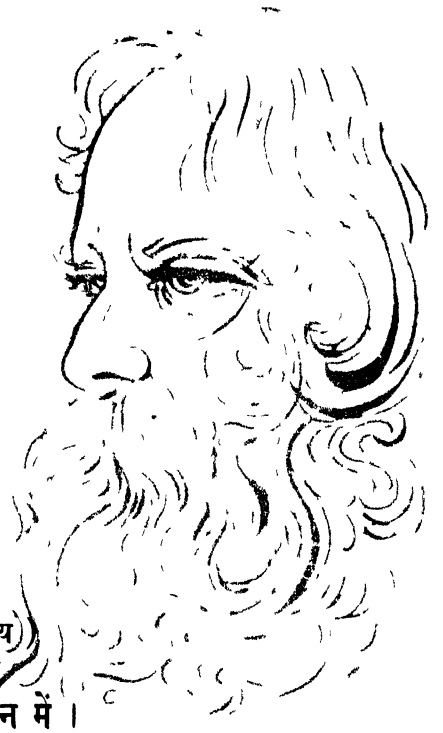

केदार

तेवड़ा (मध्यलय)

मेरी मुक्ति आलोक में रे इस गगन में ।
मेरी मुक्ति धूलिकण में फूल-फल में ॥
देह-मन के उस किनारे अपने को मैं कहाँ खोऊँ रे ।
मुक्ति मेरी पवन गावे गीत सुर मे ॥
मेरी मुक्ति सर्वजन के मन में है रे ।
दुःख-बाधा तुच्छ जानूँ कठिन पन रे ॥
विश्वधाता की यज्ञशाला आत्महोम की वह्निज्वाला ।
जीवन अपना दूँ आहुती मुक्ति-आश में ॥

पध प –	म म	रे –	सा साम म	मग पर्म	प –
मेऽ री ऽ	मु क्	ति ऽ	आ लोऽ क्	मेऽ ऽऽ	रे ऽ
×	२	३	×	२	३

प सां सां	धनि नि	धप –	पध प –	म म	रे –
इ स ग	गऽ न	मेऽ ऽ	मेऽ री ऽ	मु क्	ति ऽ
×	२	३	×	२	३

सा साम म	मग पर्म	प –	सा सा –	रे रे	रे –
आ लोऽ क	मेऽ ऽऽ	रे ऽ	मे री ऽ	मु क्	ति ऽ
×	२	३	×	२	३

रे ग रे	ग ग	ग म	म प ध	मप प	मग म
धू ऽ लि	क ण	मे ऽ	फू ऽ ल	फऽ ल	मेऽ ऽ
×	२	३	×	२	३

म सां सां	धनि नि	धप –
इ स ग	गऽ न	मेऽ ऽ
×	२	३

"मेरी मुक्ति ···इस गगन मे, मेरी मुक्ति ···मे रे" तक पुनरावृत्ति करें।

प ध प	पनि ध	नि –	सा सा सां	सां नि	रेंसां –
दे ऽ ह	मऽ न	के ऽ	उ म कि	ना ऽ	रेऽ ऽ
×	२	३	×	२	३

सां निसां ध	सां ध	निरें –	सां सां नि	निसां ध	प –
अ ऽप ने	को ऽ	मैऽ ऽ	क हाँ खो	ऊँऽ ऽ	रे ऽ
×	२	३	×	२	३

सांगं गं गं	रें –	सां नि	निरें सा सां	ध –	प –
मुऽ ऽ क्ति	मे ऽ	री ऽ	पऽ व न	गा ऽ	वे ऽ
×	२	३	×	२	३

साम म म	मग पर्म	प –	प सां सां	धनि नि	धप –
गीऽ ऽ त	सुऽ ऽर	में ऽ	इ स ग	गऽ न	मेंऽ ऽ
×	२	३	×	२	३

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

सा सा सा	रे रे	रे –	रे गरे ग	म म	प –
मे री ऽ	मु क	ति ऽ	स ऽरू व	ज न	के ऽ
×	२	३	×	२	३
मं प मंध	ध प –	म –	गं – गं	गं –	गं –
म न मेऽ	है ऽ	रे ऽ	दुः ऽ ख	बा ऽ	धा ऽ
×	२	३	×	२	३
गंमं – म	रे –	सां –	साम म म	म ग	म –
तुऽ ऽ च्छ	जा ऽ	नूँ ऽ	कऽ ठि न	प ण	रे ऽ
×	२	३	×	२	३
प ध प	नि ध	नि नि	सां – सां	सां नि	सां –
वि ऽ श्व	धा ऽ	ता की	य ऽ ज्ञ	शा ऽ	ला ऽ
×	२	३	×	२	३
सां – ध	सां –	सां रे	सां – नि	निसां –	ध प
आ ऽ त्म	हो ऽ	म की	व ऽ हि	ज्वा ऽ	ला ऽ
×	२	३	×	२	३
सांगं गं गं	रें रें	सा नि	सां गं गं	रे –	सां –
जीऽ व न	अ प	ना ऽ	दूँ ऽ आ	हु ऽ	ती ऽ
×	२	३	×	२	३
सा म म	मग पर्म	प –	प सां सां	धनि नि	धप –
मु क् ति	आऽ शऽ	मे ऽ	इ स ग	गऽ न	मेऽ ऽ
×	२	३	×	२	३

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

समाप्त

परिशिष्ट

रवीन्द्र-संगीत को उसकी विषय-विचित्रता के कारण कई भागों में विभक्त किया गया है। इनमें 'पूजा' 'स्वदेश' 'प्रेम' 'प्रकृति' 'विचित्र' 'आनुष्ठानिक' इत्यादि भाग उल्लेखनीय हैं। यद्यपि कुछ लोग रवीन्द्रनाथ को प्रकृति का ही कवि मानते हैं, और इसमें भी विशेष रूप से उनके वर्षा-गीत अतुलनीय हैं, फिर भी उनके अन्य भागो के गीत भी उच्चकोटि के हैं। इस पुस्तक मे निम्न भागो के गीत संकलित किये गये हैं। गीतों का जो संक्षिप्त परिचय दिया गया है वह नितान्त ही अति साधारण भाव से किया गया है।

पूजा

ध्वनित आह्वान (ध्वनिल आह्वान) : प्रभात-कालीन 'वैतालिक' प्रार्थना में इस गीत का गायन होता है।

मेरे मिलन के लिये (आमार मिलन लागि) : अराध्य देवता को उद्देश्य करके भक्त हृदय की नम्र भावना ही इस गीत मे प्रमुख है।

तुम्हारे असीम मे (तोमार असीमे) : ईश्वर का जब तक स्मरण किया जाता है, पार्थिव सुख-दुःख से हम विचलित नहीं होते है। लेकिन जब हम उमकी पूजा या ध्यान से विमुख होते है तो सांसारिक विपत्तियो का बोझ अनुभव करते हैं।

होगी जय (हबे जय) : यह गीत रवीन्द्रनाथ के 'फाल्गुनी' नाटक मे भी है। धीर तथा साहसी व्यक्ति की समस्त विपत्तियाँ दूर होकर विजय श्री उसका स्वागत करेगी। ऐसी ही उदात्त वाणी इस गीत मे है।

उस आसन तले (ओइ आसन तले) : भगवान के चरणो तले रहने की भक्त की आकांक्षा इस गीत मे मुख्य है।

मेरी मुक्ति आलोक में रे (आमार मुक्ति आलोय-आलोय) : भक्त को अपनी मुक्ति उन्मुक्त आकाश और आलोक रश्मि मे दिखती है। साथ ही देहातीत और मानसिक जगत् से दूर कही मुक्ति की आशा मे जाना भी चाहता है। इस गीत मे कवि ने अपनी मुक्ति गीत के सुर मे देखी है।

स्वदेशी

ओ भुवन मन मोहिनी (अयि भुवन मन मोहिनी) : भारत माता को उद्देश्य करके महाकवि ने इस गीत की रचना की है।

प्रकृति

वीणा मेरी कौन सुर गाबे (मोर वीणा उठे कोन सुरे बाजि) : इस गीत मे वसंत ऋतु के आगमन का पूर्वाभास दिखाई पड़ता है।

प्रखर तपन ताप से (प्रखर तपन तापे) : ग्रीष्मकाल के उदास वातावरण का चित्रण है इस गीत में !

बादल बाउल बजा रहा रे (बादल बाउल बाजाय रे) : वर्षाकाल के उमड़ते हुये बादलो के झुंड को बंगाल के एक गायक सम्प्रदाय बाउल से तुलना की है। ये लोग गाने के साथ-साथ नाचते भी हैं। वर्षाकाल की अनुभूति का इस गीत मे सजीव चित्रण है !

सावन गगन में (शाङ्गन गगने) : रवीन्द्रनाथ की 'भानुसिहेर पदावली' से यह गीत लिया गया है। यह ब्रज बुलि (ब्रजभाषा) मे लिखा गया है। एक समय किशोर रवीन्द्रनाथ ने प्राचीन पदावली की प्रेरणा से ही ऐसे गीतो को 'भानुसिह' के नाम से लिखा था। विद्यापति आदि कवियो ने जिस प्रकार अपने पदो मे भनिता 'भनई विद्यापति' से की है, रवीन्द्रनाथ ने भी उसका अनुकरण 'भने भानु' 'भानुसिह तव दास' तथा 'भानुसिह वंदिछे' से किया है। इस गीत मे वर्षा-काल मे राधा का विरह तथा उनकी कृष्ण-दर्शन की आकुलता को कवि ने बड़े मधुर ढङ्ग से चित्रित किया है। रूपांतर मे भी विशेष कोई परिवर्त्तन नही किया गया है।

नमो नमो नम करुणा-घन : ग्रीष्मकाल के पश्चात वर्षा को करुणाघन मूर्त्ति मे उतरते देख कवि ने इस गीत से उसकी वंदना की है।

आज वर्षण मुखरित (आजि वरिषन मुखरित) : इस गीत मे वर्षाकाल की रात्रि मे विरहिणी की मनोव्यथा फूट पड़ी है।

मेरा मन मेघ का साथी (मन मोर मेघेर सगा) : वर्षाकाल के मेघ को देखकर कवि-मन असीम दिगंत मे हस-बलाकाओ की भाँति विचरण करना चाहता है। वर्षाकाल की प्रकृति का चिर-परिचित रूप हमे इस गीत मे दिखाई पड़ता है।

बादल धारा चली गई (बादल धारा हलो सारा) : वर्षाकाल के अन्त मे प्रकृति के उदास वातावरण को चित्रित किया गया है।

शरत आलोक के कमलवन मे (शरत आलोर कमल वने) : शरत-काल के आगमन पर हमारे मनमे जो भाव आते है—उनका रूप इस गीत मे कवि ने गाया है।

वसंत जाग्रत द्वार तेरे (आजि वसंत जाग्रत द्वारे) : वसंत के आगमन पर मानव-मन मे जो एक विशेष अभिव्यक्ति आती है—इस गीत मे उसीका प्रतिफलन है।

ओरे गृहवासी खोल द्वार (ओरे गृहवासी खोल दार) : शान्तिनिकेतन मे यह गीत प्रतिवर्ष होली के दिन नृत्य आदि के साथ गाया जाता है।

अरी बधू सुन्दरी (ओगो बधू सुन्दरी) : इस गीत में वसंत ऋतु का मनोहर चंचल रूप दिखाई पड़ता है।

झरे-झरे-झरे रंग का झरना (झर-झर-झर-झरे रंगेर झरना) : वसंत में उत्फुल्लित मानव का आनन्द गान इस गीत से गाया है कवि ने !

अरे आओ रे (ओरे आय रे) : सम्पूर्ण आनन्द को त्याग मे विलीन करने का मधुर गान !

तुम कुछ दे जाओ (तुमि किछु दिये जाओ) : वसंत के आनन्द मे भी कवि ने वेदना का अनुभव किया है। प्रबल आनन्द मे भी जो एक वेदना रहती है— इस गीत मे उसी का रूप दिखाई पड़ता है।

विचित्र

दूर गाँव से (ग्राम छाड़ा ओई) : यह गीत रवीन्द्रनाथ के प्रायश्चित नाटक मे भी है। इसका सुर बंगाल के गायक समुदाय 'बाउलो' जैसा है।

वायु बहे जोर-जोर (खर वायु वय वेगे) : रूपक के माध्यम से तूफ़ान को देखकर नाविक को सावधान रहने का अभय आश्वास !

हिंसा से उन्मत्त पृथ्वी (हिंसाय उन्मत्त पृथ्वी) भगवान बुद्ध के जन्म-दिवस के लिये रचित। इस गीत का दूसरा चरण साधारणतः नहीं गाया जाता है। इसीलिये इस पुस्तक मे केवल प्रथम और तृतीय चरण ही दिये गये है।

संगीत कार्यालय के प्रकाशन

बालसंगीत शिक्षा भाग १ व २	१-२५
" " " ३	१-००
सगीत किशोर	१-५०
सगीत शास्त्र	१-००
'क्रमिक पुस्तक' भाग १	१-००
" भाग ३ व ४ प्रत्येक	१०-००
" भाग २, ५ व ६ प्रत्येक	८-००
सगीत सोपान	३-००
सगीत विशारद	५-००
सगीत सीकर	५-००
सगीत अर्चना	५-००
सगीत कादम्बिनी	५-००
भातखडे सगीतशास्त्र भाग १	५-००
" " भाग २	६-००
" " भाग ३	६-००
" " भाग ४	१५-००
मारिफुन्नगमात भाग १	६-००
" भाग २	६-००
" भाग ३	१-२५
सगीत सागर	६-००
बेला विज्ञान	४-००
सितार मालिका	५-००
कलावन्तो की गायकी	३-००
हमारे सगीत रत्न	१५-००
सहगल सगीत	२-५०
बैंजो मास्टर	२-००
सगीत पद्धतियो का तु० अध्ययन	२-५०
स्वरमालिका	२-००
रवीन्द्र सगीत	२-००
उ०भार० संगीत का स०इति०	२-००
हरिदास अंक	१-००
सूरसगीत भाग १ व २ प्रत्येक	१-५०
ताल अंक ...	४-००
ठुमरी अंक ...	२-५०
सन्त सगीत अंक	२-५०
राष्ट्रीय सगीत अंक	२-५०
राग अंक ...	२-५०
वाद्य सगीत अंक	३-००
बिलावल थाट अंक	२-५०
कल्याण थाट अंक	२-५०
भैरव थाट अंक	२-५०
पूर्वी थाट अंक	२-५०
खमाज थाट अंक	२-५०
काफी थाट अंक	२-५०
मारवा थाट अंक	२-५०
नृत्य अंक	३-००
नृत्यशाला	२-००
कथकलि नृत्यकला	२-५०
नृत्य भारती	३-००
म्यूजिक मास्टर	२-००
महिला हारमोनियम गाइड	१-५०
सगीत पारिजात भाग-१	४-००
स्वरमेल कलानिधि	१-००
सगीतदर्पण ...	२-००
फिल्म संगीत भाग २६ वाँ	४-००
आवाज सुरीली कैसे करें ?	२-००
अप्रकाशित राग भाग १,२,३.	४-५०
मृदङ्ग तबला प्रभाकर	२-००
सगीत निबधावली भाग १	२-००
ताल प्रकाश	छप रही है।
रविशकर के आर्केस्ट्रा	छप रही है।

'संगीत' मासिक पत्र सन् १९३५ से बराबर निकल रहा है, वार्षिक मूल्य ६)५६

प्रकाशक—सङ्गीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)